mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-163 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना

13 जून 2024 गुरुवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

फ्रैंच ओपन...

संक्षिप्त समाचार

मोदी के पीएम बनने पर जिनपिंग ने साधी चुप्पी

- घिरे तो चीनी दूतावास के बदले सुर, गलती पर पर्दा डालने को दी सफाई

बीजिंग (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी ने इस रविवार को भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ली है। लगातार तीसरी बार पीएम बनने पर नरेंद्र मोदी को दुनियाभर के राष्ट्राध्यक्षों ने बधाई दी है। वहीं भारत के पड़ोसी चीन की सत्ता में सर्वेसर्वा शी जिनपिंग ने चुप्पी साधे रखी। शी जिनपिंग की ओर से मोदी को बधाई नहीं दिए जाने की चीन और भारत में ही नहीं कई देशों की मीडिया में चर्चा हुई। इसे दोनों देशों के तनावपूर्ण रिश्तों को और खराब करने की तरह से देखा गया। आलोचना होने पर चीन की ओर से सफाई दी गई कि जिनपिंग चीन के राष्ट्रपति हैं और नरेंद्र मोदी ने पीएम पद की शपथ ली है।

लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी होंगे अगले सेना प्रमुख

- 30 जून को पदभार संभालेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने मंगलवार 11 जून की रात लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी को नया आर्मी चीफ अपॉइंट किया है। वे मौजूदा सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे की जगह लेंगे। लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी 30 जून को पदभार संभालेंगे। इसी दिन मौजूदा सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे रिटायर हो रहे हैं। लेफ्टिनेंट जनरल द्विवेदी 30वें सेना प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालेंगे। इससे पहले वे सेना के वाइस चीफ, नॉर्दर्न आर्मी कमांडर, इन्फेंट्री और सेना में कई अन्य कमांड के प्रमुख के रूप में देश की सेवा कर चुके हैं। लेफ्टिनेंट जनरल द्विवेदी वर्तमान में वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ के पद पर कार्यरत हैं। उनकी नियुक्ति में सरकार ने सीनियॉरिटी के सिद्धांत का पालन किया है।

भारत बोला-

भारतीयों की सेना में भर्ती बंद करे रूस

- कहा-यह दोनों देशों के रिश्तों के लिए सही नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूक्रेन जंग के बीच रूस की सेना में तैनात 2 और भारतीयों की मौत हो गई है। विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को इसकी जानकारी दी। इसके बाद भारत ने कहा है कि रूस हर हाल में अपनी सेना में भारतीयों को भर्ती करना बंद करे। यह दोनों देशों की पार्टनरशिप के लिए सही नहीं है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, मॉस्को में भारतीय दूतावास ने दोनों भारतीय नागरिकों के शवों को जल्द से जल्द स्वदेश वापस लाने के लिए रूस के रक्षा मंत्रालय समेत रूसी अधिकारियों पर दबाव डाला है। इसके अलावा विदेश मंत्रालय ने भारतीय नागरिकों की मौत पर दुख जताया है। विदेश मंत्रालय ने भारतीयों को भी रूस में नौकरी का ऑफर मिलने पर सावधानी बरतने की अपील की है।

कुवैत की बिल्डिंग में भीषण आग

40 भारतीयों की मौत

कुवैत सिटी (एजेंसी)। कुवैत के मंगाफ शहर की एक इमारत में आग लग गई। इसमें 40 भारतीयों के मरने की खबर है। इनमें 5 केरल के रहने वाले थे। हादसे में 30 भारतीयों समेत 50 से ज्यादा लोग जख्मी भी हुए हैं। हालांकि अब तक 40 भारतीयों की मौत की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने हादसे में 30 भारतीयों के जख्मी होने की जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि भारतीय राजदूत ने घटनास्थल पर पहुंचकर घायलों से मुलाकात की है।

न्यूज एजेंसी रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक कुवैत के समयानुसार ये हादसा आज सुबह करीब 6 बजे हुआ। सुबह ग्राउंड फ्लोर के किचन में लगी आग तेजी से पूरी इमारत में फैल गई। कई लोग इमारत के अंदर ही फंसे रह गए। आग लगने की वजह का अब तक पता नहीं चला है। कुवैत टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक बिल्डिंग में 160 से ज्यादा लोग रह रहे थे। गृह मंत्री शेख फहद अल-यूसुफ ने बताया कि इमारत में कई लोग अवैध रूप से रह रहे थे।

- 5 केरल के, 30 भारतीय ज मी
- इमारत में 160 मजदूर रहते थे

इसलिए अभी मरने वालों के बारे में पुख्ता जानकारी नहीं है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अपनी पोस्ट में कहा, कुवैत में हुए हादसे से स्तब्ध हूं। वहां करीब 40 लोगों की मौत हुई है। हम डीटेल्स सामने आने का इंतजार कर रहे हैं। जिन लोगों ने अपने परिजनों को खोया है, उनके प्रति मेरी संवेदनाएं हैं। भारतीय राजदूत आदर्श स्वाइका ने भी घटनास्थल पर पहुंचकर घायलों से मुलाकात की है। पीएम नरेंद्र मोदी ने भी इस घटना को लेकर संवेदना जाहिर की है।

ओडिशा के नए मुख्यमंत्री बने मोहन माझी, ली शपथ

शपथ लेने के बाद मांझी ने पीएम मोदी से लिया आशीर्वाद

केवी सिंहदेव और प्रभाती परिदा ने ली डिप्टी सीएम की शपथ

भुवनेश्वर (एजेंसी)। एक दिन पहले बीजेपी विधायक दल के नेता चुने गए मोहन माझी ओडिशा के नए मुख्यमंत्री बन गए हैं। मोहन माझी ने एक बड़े समारोह में मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। उन्हें राज्यपाल रघुवर दास ने शपथ दिलाई। बीजेपी ने पहली बार ओडिशा में अपने बूते पर जीत हासिल करते हुए बहुमत हासिल किया है। राज्य में मोहन माझी की सरकार में दो डिप्टी सीएम भी होंगे। शपथ ग्रहण समारोह में केवी सिंह देव और पार्वती परीदा ने डिप्टी सीएम के तौर पर शपथ ग्रहण की। ओडिशा विधानसभा चुनावों में बीजेपी ने 78 सीटें जीतकर अपने बूते पर बहुमत हासिल किया है। राज्य में 25 साल के लंबे इंतजार के बाद परिवर्तन हुआ है। इसके बाद नवीन पटनायक की विदाई हुई है। अभी इतने सालों तक बीजेडी सत्ता में थी। माझी मंत्रिमंडल में 13 मंत्री भी शपथ ले रहे हैं। इनमें सुरेश पुजारी, रबिनारायण नाइक, नित्यानंद गोंड, कृष्ण चंद्र पात्रा, पृथ्वीराज हरिचंदन, मुकेश महालिंग, बिभूति भूषण जेना, कृष्ण चंद्र महापात्रा, गणेश राम सिंह खुंटिया, सूर्यवंशी सूरज, प्रदीप बालसामंता, गोकुला नंद मल्लिक और संपद कुमार स्वैन शामिल हैं। शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, जेपी नड्डा, अमित शाह के अलावा यूपी, गुजरात, छत्तीसगढ़,एमपी,असम, हरियाणा, गोवा और उत्तराखंड के सीएम मौजूद थे।

तैयार रहिए, हम आपके अफसर को सीधे जेल भेजेंगे

सुप्रीम कोर्ट ने पानी पर हिमाचल, दिल्ली सरकार को लगाई फटकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने पानी की बर्बादी और टैंकर माफिया पर नकेल नहीं कसे जाने को लेकर बुधवार को दिल्ली सरकार को जमकर फटकार लगाई। कोर्ट ने यहां तक कह दिया कि अगर दिल्ली सरकार टैंकर माफिया पर नकेल नहीं कस पाती है तो हम दिल्ली पुलिस को लगाएंगे। शीर्ष अदालत ने पूछा कि हिमाचल से पानी आ रहा है तो ये दिल्ली में कहां जा रहा है। हिमाचल प्रदेश से दिल्ली के लिए अतिरिक्त पानी छोड़े जाने के मुद्दे पर साफ-साफ जानकारी नहीं दिए जाने पर सुप्रीम कोर्ट ने कड़ी चेतावनी देते हुए कहा, तैयार रहिए, हम आपके अफसर को सीधे जेल भेजेंगे। कोर्ट ने संबंधित अफसर को गुरुवार को कोर्ट में पेश होने कहा है। शीर्ष अदालत ने दिल्ली सरकार से गुरुवार तक हलफनामा देकर बताने को कहा है कि उसने पानी की बर्बादी रोकने के लिए क्या कदम उठाए हैं। जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा और जस्टिस प्रसन्ना बी. वराले की वकेशन बेंच ने दिल्ली सरकार को निर्देश दिया कि वह हलफनामा दाखिल कर बताए कि उसने पानी की बर्बादी रोकने के लिए क्या कदम उठाए हैं। बेंच ने हिमाचल प्रदेश सरकार पर भी नाराजगी जताई, जिसने एक पत्र में कहा था कि राज्य सरकार दिल्ली को जो 132 क्यूसेक अतिरिक्त पानी छोड़ना चाहती थी, वह 'पहले से ही निर्बाध रूप से बह रहा है।' अदालत ने आश्चर्य जताया कि फिर राज्यों द्वारा पहले यह दावा करने का क्या मतलब था कि बैराजों पर अतिरिक्त पानी को मापा जा सकता है, ताकि पता चल सके कि कितना अतिरिक्त पानी छोड़ा गया है। जस्टिस मिश्रा ने पूछा, हिमाचल ने इस कोर्ट के सामने पेश किया कि हमारे पास अतिरिक्त पानी है। और अब पत्र में कहा गया है कि हमारे पास जो पानी है, वह पहले ही छोड़ा जा चुका है, इसका मतलब है कि उनके पास कोई अतिरिक्त पानी नहीं है। आपकी (दिल्ली सरकार) याचिका का पूरा आधार यह है कि हिमाचल के पास अतिरिक्त पानी है, 137 क्यूसेक। फिर यदि आप इसे पहले ही छोड़ रहे हैं, तो हमारे आदेश के अनुसार जल बोर्ड की बैठक में इसकी जानकारी क्यों नहीं दी गई।

चंद्रबाबू नायडू चौथी बार बने आंध्र प्रदेश के सीएम

- पवन कल्याण डिप्टी सीएम,टीडीपी से 20, जनसेना से 3 और भाजपा से 1 मंत्री ने ली शपथ

अमरावती (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश में भी एनडीए की सरकार बन गई है। तेलगु देशम पार्टी सुप्रीमो चंद्रबाबू नायडू ने बुधवार को राज्य के 24वें मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। वे राज्य की चौथी बार कमान संभालेंगे। इसके साथ ही उन्होंने आंध्र में सबसे ज्यादा बार मुख्यमंत्री बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। नायडू के अलावा जनसेना प्रमुख और एक्टर पवन कल्याण ने डिप्टी सीएम पद की शपथ ली। उन्होंने शपथ लेने के बाद नायडू के पैर छुए। तीसरे नंबर पर नायडू के बेटे नारा लोकेश ने शपथ ली। नई सरकार में सीएम और डिप्टी सीएम समेत 25 सदस्य होंगे। इसमें टीडीपी के 20, जनसेना के 3 और भाजपा के एक मंत्री शामिल हैं। एक पद खाली रखा गया है। राज्यपाल अब्दुल नजीर ने विजयवाड़ा में केसरपल्ली आईटी पार्क में सीएम और मंत्रियों को शपथ दिलाई। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमित शाह समेत एनडीए के मंत्री और अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री भी शामिल हुए। शपथ के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने नायडू को गले लगाकर बधाई दी। नायडू के कैबिनेट में उनके बेटे और टीडीपी महासचिव नारा लोकेश, प्रदेश अध्यक्ष के. अत्चन्नायडू और जनसेना पार्टी की राजनीतिक मामलों की समिति के अध्यक्ष नादेंडला मनोहर शामिल हैं।

चुनाव खत्म,अब सरकार की 100 दिन के एजेंडे पर नजर

शपथ लेने के अगले दिन से ही काम में जुट गए पीएम मोदी

मंत्रियों को थमाया 100 दिवसीय एजेंडा, सुझाव होंगे शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के परिणाम के बाद केंद्र में एनडीए की सरकार का गठन हो गया और एक बार फिर से नरेंद्र मोदी पीएम बन गए। पीएम पद की शपथ लेने के अगले दिन से ही नरेंद्र मोदी एक्शन में आ गए हैं।

दरअसल भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार इस वक्त अपने 100 दिवसीय योजना और विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों की समीक्षा कर रही है। जिससे कि हर मंत्रालय को उनका एजेंडा थमा दिया जाए। सूत्रों ने बताया कि कैबिनेट सचिव की देखरेख में नौकरशाहों और नीति आयोग के अधिकारियों द्वारा तैयार किया गया 100 दिवसीय एजेंडा चुनाव की घोषणा के बाद तैयार किया गया था।

- विकसित भारत के लक्ष्य के लिए सरकार स्टूडेंट्स से भी करेगी बात

भाजपा घोषणापत्र में शामिल आयुष्मान भारत स्वास्थ्य कार्यक्रम के विस्तार जैसे कुछ प्रस्ताव भी इसमें शामिल किए जा सकते हैं। अधिकारियों ने संकेत दिया कि प्रधानमंत्री मोदी की इच्छा के अनुसार सभी मंत्रालयों के लिए विकसित भारत 2047 एजेंडा पर व्यापक सार्वजनिक परामर्श किया जाएगा। यह विकसित भारत 2047 एजेंडा हितधारकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। इनमें से कुछ विचार बजट का हिस्सा बनेंगे। सरकार विकसित भारत लक्ष्यों को अंतिम रूप देने से पहले कॉलेज जाने वाले छात्रों और समाज के व्यापक वर्ग के विचारों को शामिल करना चाहती है। इसके अलावा, सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने केंद्र की प्राथमिकताओं को टारगेट किया है।

अखिलेश यादव ने करहल की विधायकी से दिया इस्तीफा

- कन्नौज के बने रहेंगे सांसद, नेता प्रतिपक्ष का पद भी छोड़ा

मैनपुरी/लखनऊ (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव में कन्नौज सीट से शानदार जीत हासिल करने के बाद सपा मुखिया अखिलेश यादव ने बड़ा फैसला लिया है। उन्होंने करहल सीट से विधायक पद से इस्तीफा दे दिया है। साथ ही यूपी विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के पद से भी इस्तीफा दे दिया है। अब करहल विधानसभा पर उपचुनाव कराया जाएगा। बताया जा रहा है कि इसके लिए मुलायम सिंह यादव के पोते तेज प्रताप सिंह यादव को उम्मीदवार बनाया जा सकता है। वहीं, नेता प्रतिपक्ष पद के लिए शिवपाल यादव के नाम की चर्चा है। सपा प्रमुख यादव हालिया लोकसभा चुनाव में कन्नौज संसदीय सीट से चुनाव जीते हैं, जबकि 2022 के विधानसभा चुनाव में वह मैनपुरी जिले के करहल विधानसभा क्षेत्र से चुनाव जीते थे। विधानसभा में फिलहाल उनके पास नेता प्रतिपक्ष का दायित्व था। यूपी की 80 लोकसभा सीटों में से सपा 37 सीटें जीत कर लोकसभा में तीसरी बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। अखिलेश के अलावा फैजाबाद सीट से पहली बार सपा सांसद चुने गए अवधेश प्रसाद ने भी विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। वह मिल्कीपुर विधानसभा से सपा विधायक थे। वह 9 बार से विधायक चुने जा रहे थे। अवधेश प्रसाद यूपी विधानसभा में अखिलेश यादव के बगल में बैठे नजर आते हैं।

एनएसजी का हब बनेगा अयोध्या,और सख्त होगी सुरक्षा

राम मंदिर के पास होगा बेस पॉइंट, आतंकी हमले की आशंका और सुरक्षा को लेकर फैसला

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में यूपीएटीएस और एएसएफ की यूनिट के बाद अब नेशनल सिक्योरिटी गार्ड (एनएसजी) का हब बनेगा। एनएसजी का यह देश में छठवां हब होगा। अभी चेन्नई, हैदराबाद, कोलकाता, मुंबई और अहमदाबाद में एनएसजी के रीजनल हब हैं। अयोध्या में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या और आतंकी हमलों की धमकी को देखते हुए यह फैसला लिया है। जल्द ही इस पर काम भी शुरू होगा। गृह मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि एनएसजी का हब राम मंदिर के पास होगा। जमीन के लिए प्रक्रिया शुरू हो गई है। 22 जनवरी 2024 को राम मंदिर में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद से हर दिन करीब डेढ़ लाख श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं। सूत्रों के मुताबिक, मंदिर पर आतंकी हमले को लेकर अक्सर धमकियां मिलती रहती हैं। ऐसे में मंदिर की सुरक्षा को देखते हुए सरकार यह कदम उठाने जा रही है। श्रीराम जन्मभूमि परिसर और मंदिर की सुरक्षा की जिम्मेदारी स्स्न के हाथों है। मंदिर की सुरक्षा में 200 जवान तैनात हैं। यूपी सरकार ने हाल ही में एटीएस और पुलिस के जवानों को मिलाकर एसएसएफ का गठन किया है। 14 दिन पहले राम मंदिर को बम से उड़ाने की धमकी भी मिली थी। पहले एक आईडी से इंस्टाग्राम पर पोस्ट की गई। फिर 112 पर कॉल आई। राम मंदिर को उड़ाने की धमकी मिलते ही पुलिस में हड़कंप मच गया। साइबर एक्सपर्ट और सर्विलांस टीम को तुरंत ऐक्टिव किया।

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सीआरपीएफ जवान श्री कबीर उईके के शहीद होने पर खेद व्यक्त किया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने छिंदवाड़ा जिले के सीआरपीएफ जवान श्री कबीर उइके के जम्मू कश्मीर में आतंकी मुठभेड़ में शहीद होने पर खेद व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से शहीद जवान की पुण्य आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने और परिजनों को यह गहन दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है। उल्लेखनीय है कि छिंदवाड़ा ज़िले के ग्राम पुलपुलडोह थाना बिछुआ के कबीर उईके जम्मू कश्मीर में सीआरपीएफ में तैनात थे। मंगलवार की रात कठुआ में आतंकी मुठभेड़ में गोली लगने से वे घायल हो गए, उन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया परंतु उन्हें बचाया नहीं जा सका।

पोलियो दिवस 23 जून को नौनिहालों को दो बूँद ज़िंदगी की अवश्य पिलायें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा है कि प्रदेश वर्ष 2008 से आज तक पोलियो मुक्त बना हुआ है। उन्होंने सभी नागरिकों और अभिभावकों द्वारा पोलियो से इस लड़ाई में प्राप्त सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत पोलियो मुक्त है। लेकिन पोलियो अभी भी पड़ोसी देशों में है और फिर लौट सकता है। उप मुख्यमंत्री ने प्रदेश के समस्त नागरिकों, अभिभावकों से अपील की है कि अपने नौनिहालों की सुरक्षा में कोई चूक न होने देन, पोलियो दिवस 23 जून को दो बूँद ज़िंदगी की अवश्य दिलायें। उल्लेखनीय है कि बच्चों को डबल सुरक्षा देने की दृष्टि से रविवार 23 जून 2024 को, प्रदेश के समस्त जिलों में, 0 से 5 वर्ष के बच्चों को, दो बूंद जिन्दगी की, देने की व्यवस्थाएं सुनिश्चित कर ली गई हैं।

उप मुख्यमंत्री ने रीवा वि.वि. के पूर्व उप कुलपति के निधन पर शोक व्यक्त किया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने विंध्य क्षेत्र के प्रख्यात कवि, प्राणालोक पत्रिका के संस्थापक, सीधी जिले के भंवरसेन में महाकवि बाणभट्ट समारोह के संरक्षक एवं रीवा वि.वि. के पूर्व उप कुलपति श्री रामदर्शन मिश्रा राही जी के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह साहित्य एवं शिक्षा जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। श्री शुक्ल ने राही को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की है।

कर्मचारियों के गोपनीय प्रतिवेदनों के मूल्यांकन के लिए ऑनलाइन प्रणाली लागू

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा विभाग ने शासकीय महाविद्यालयों एवं संचालनालय में पदस्थ शैक्षणिक/गैर-शैक्षणिक अधिकारियों/कर्मचारियों के गोपनीय प्रतिवेदनों के मूल्यांकन एवं गोपनीय प्रतिवेदनों से संबंधित अभ्यावेदनों के निराकरण के लिए ऑनलाईन प्रणाली लागू की है, जो वर्षांत 31 मार्च 2024 से लागू मानी जाएगी। उच्च शिक्षा विभाग में कार्यरत राजपत्रित प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी संवर्ग के अधिकारियों के लिए निर्धारित ऑनलाईन मूल्यांकन प्रणाली के अनुसार क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक, सहायक संचालक, स्नातकोत्तर प्राचार्य और स्नातक प्राचार्य के लिए समीक्षक प्राधिकारी आयुक्त उच्च शिक्षा और स्वीकृतकर्ता प्राधिकारी प्रमुख सचिव/ सचिव उच्च शिक्षा होंगे। प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक (प्रवर श्रेणी), सहायक प्राध्यापक (वरिष्ठ एवं कनिष्ठ श्रेणी), ग्रंथपाल, क्रीड़ाधिकारी एवं रजिस्ट्रार के लिए समीक्षक प्राधिकारी क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक और स्वीकृतकर्ता प्राधिकारी आयुक्त उच्च शिक्षा होंगे।

अभी तक 48 लाख 39 हजार मीट्रिक टन से अधिक हुई गेहूँ खरीदी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि प्रदेश के सभी जिलों में बनाये गये विभिन्न उपार्जन केन्द्रों में अभी तक 48 लाख 39 हजार 202 मीट्रिक टन गेहूँ की खरीदी हो चुकी है। गेहूँ की खरीदी 6 लाख 16 हजार 254 किसानों से की गयी है। किसानों को 11 हजार 427 करोड़ 57 लाख रूपये का भुगतान भी किया जा चुका है। वर्तमान में कृषि उपज मंडी स्तर पर स्थापित 311 गेहूँ उपार्जन केन्द्रों में गेहूँ की खरीदी जारी है। इन केन्द्रों में गेहूँ की खरीदी 25 जून 2024 तक की जायेगी।

योग दिवस की तैयारियों पर कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक आयोजित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। 21 जून को आयोजित किए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों के संबंध में मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयुक्त आयुष श्रीमती सोनाली वायंगनकर की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई।

मंत्रिपरिषद से स्वीकृत पदों पर शीघ्र भर्ती के लिए औपचारिकताएं पूर्ण करें-उप मुख्यमंत्री शुक्ल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने मंत्रालय वल्लभ भवन में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के विभिन्न विषयों की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री ने विगत दिवस मंत्रिपरिषद द्वारा अनुमोदित 46 हज़ार 491 विभागीय पदों और 607 विशेषज्ञ चिकित्सकीय पदों की पूर्ति के लिए समस्त औपचारिकताएँ प्राथमिकता से पूर्ण करने के निर्देश दिये। हमीदिया कैथ लैब शिफ्टिंग में हो रहे विलंब पर उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने नाराजी व्यक्त की है। श्री शुक्ल ने कहा कि कैथ लैब का कार्य क्रिटिकल स्वास्थ्य सेवा प्रदाय से संबंधित है। इस कार्य में लापरवाही, प्रशासनिक उदासीनता अस्वीकार्य है। उन्होंने निर्देश दिए कि 1 माह के अंदर कैथ लैब शिफ्टिंग की कार्रवाई पूर्ण करें। उप मुख्यमंत्री ने विभागीय अधिकारियों को प्राथमिकता से तकनीकी और प्रशासनिक स्वीकृति की कार्रवाई करने के भी निर्देश

दिये। उन्होंने कहा कि कैथ लैब शिफ्टिंग कार्य की नियमित समीक्षा की जाएगी और अनावश्यक विलंब पर जम्मिदारी नियत की जाएगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेश में स्वीकृत भवन-विहीन 1 हज़ार 770 स्वास्थ्य अधोसंरचनाओं के निर्माण कार्य की समीक्षा की। इनमें उप स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र आदि के निर्माण कार्य शामिल हैं। उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिये कि अधोसंरचना विकास के साथ उपकरण, मैनपॉवर आदि की उपलब्धता भी समय-सीमा में की जाये इससे शीघ्र स्वास्थ्य सेवाओं का प्रदाय प्रारंभ हो सके। उप मुख्यमंत्री ने रीवा और शहडोल संभाग में स्वास्थ्य अधोसंरचनाओं के उन्नयन और रीवा के पुनर्घनत्वीकरण कार्यों की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिये।

बैठक में प्रमुख सचिव स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री विवेक पोरवाल, डीन जीएमसी भोपाल डॉ कविता सिंह सहित स्वास्थ्य विभाग वरिष्ठ अधिकारी, पीआईयू, पुलिस हाउसिंग बोर्ड, एमपीबीडीसी, हाउसिंग बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

29 हजार पेड़ों को बचाने शिवाजी नगर में रहवासी धरने पर बैठे, पूर्व मंत्री पीसी शर्मा भी मौजूद

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शिवाजी नगर, तुलसी नगर क्षेत्र में 29 हजार पेड़ों के काटे जाने के विरोध में बुधवार को कांग्रेस के पूर्व मंत्री-विधायक पीसी शर्मा, पार्षद योगेंद्र सिंह गुड्डू चौहान के नेतृत्व में रविशंकर मार्केट में रहवासी धरने पर बैठ गए। पूर्व मंत्री शर्मा का कहना है कि पहले स्मार्ट सिटी के नाम पर पेड़ों को काटा गया। वहां से लोगों को बेघर किया गया। जिन पेड़ों को शिफ्ट किया गया, वह आज जीवित नहीं हैं। जिन लोगों को वहां से बेघर किया गया, वे आज तक भटक रहे हैं, उनको आवास नहीं मिले। अब री-डेपलपमेंट के नाम पर शिवाजी नगर, तुलसी नगर के पेड़ों को काटने पर सरकार आमादा है। यहां से भी हजारों लोगों को बेघर कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि शहर में मंत्री और विधायकों के लिए पर्याप्त बंगले हैं। उनका रि-डेवलपमेंट किया जाना चाहिए। शिवाजी नगर में हजारों लोगों को बेघर किया जा रहा है।

यह नहीं होने देंगे। इसके लिए भले ही जेल जाना पड़े। कांग्रेस विधानसभा में यह मुद्दा उठाया जाएगा । दिल्ली तक इस मुद्दे को लेकर जाएंगे, लेकिन यहां के लोगों को न बेघर होने देंगे और न ही शिवाजी नगर के 40 साल पुराने 29 हजार पेड़ों को काटने देंगे । धरना प्रदर्शन में पूर्व मंत्री, पार्षद, कांग्रेस कार्यकर्ता समेत बड़ी संख्या स्थानीय रहवासी शामिल हुए। धरना-प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने प्रदेश सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इस प्रस्ताव को रद्द करने की मांग कांग्रेस कार्यकर्ता और स्थानीय रहवासियों ने की । पूर्व मंत्री शर्मा का कहना है कि स्मार्ट सिटी के नाम पर जनता के साथ जो धोखा हुआ है। वह जनता को याद है। उसे दोबारा नहीं होने दिया जाएगा । यहां सरकार ने 2267 सरकारी बंगलों और मकानों को तोड़ने का प्लान बनाया है। मंत्रियों के लिए 30 बंगले, 16 फ्लैट और 230 विधायकों के फ्लैट के साथ 3480 सरकारी अफसरों के बंगले और मकान बनाने की योजना है।

हवाई सेवा से जुड़ेंगे मध्य प्रदेश के 8 शहर, पहली फ्लाइट 13 जून से

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के 8 शहरों को हवाई सेवा से जोड़ने के लिए पीएमश्री पर्यटन वायुसेवा का शुभारंभ भोपाल से 13 जून को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव करेंगे। इन शहरों में भोपाल, इंदौर, जबलपुर, रीवा, उज्जैन, ग्वालियर, सिंगरौली एवं खजुराहो शामिल हैं। 6 सीटर वाले दो एयरक्राफ्ट इन शहरों के बीच उड़ान भरेंगे। पहली फ्लाइट भोपाल-जबलपुर-रीवा-सिंगरौली की होगी। मालूम हो कि गत 14 मार्च को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल के स्टेट हैंगर से पीएम श्री पर्यटन वायु सेवा का शुभारंभ किया था। टिकट बुकिंग के लिए ऑनलाइन सुविधा फ्लायओला वेबसाइट डेवलप की गई है। इसका किराया अभी घोषित नहीं किया गया है। प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति और प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड शिवशेखर शुक्ला ने बताया कि पर्यटन विभाग द्वारा मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में प्रदेश के पर्यटन स्थलों के बीच कनेक्टिविटी बेहतर एवं सुगम बनाने और पर्यटन सुविधाओं में विस्तार करने के लिए लगातार नवाचार किए जा

रहे हैं। यह पर्यटन क्षेत्र के साथ-साथ उद्योग, व्यापार, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं संस्कृति और कला के प्रचार-प्रसार के लिए भी लाभदायक है। प्रमुख सचिव ने बताया कि वायु सेवा की बुकिंग के लिए इंदौर, भोपाल एवं जबलपुर के एयरपोर्ट पर बुकिंग काउंटर स्थापित किए जा चुके हैं। प्रदेश के 8 शहरों को हवाई सेवा के माध्यम से जोड़ा जा रहा है। जिसका विस्तार आने वाले समय में कुछ और शहरों तक किया जाएगा।

हमीदिया में कैथलैब को नई जगह पर शिफ्ट होने में लगेंगे छह माह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। हमीदिया अस्पताल के कैथलैब को नए भवन ए ब्लाक की तीसरी मंजिल पर शिफ्ट किया जाएगा। इसके लिए छह माह का समय लगेगा। अभी यह कैथलैब हमीदिया अस्पताल के पुराने भवन में संचालित हो रही है। यहां दिल से जुड़े रोगियों के आपरेशन होते हैं। इस कैथलैब को शिफ्ट करने में 50 लाख रुपए का खर्चा आएगा। लैब को अक्टूबर से पहले नए भवन में शुरू करने की योजना बनाई गई थी, क्योंकि सर्दियों में दिल के मरीज बढ़ जाते हैं, जिससे मरीजों का भार भी एम्स व बीएमएचआरसी पर आएगा। जिससे उन्हें इलाज के लंबे

इंतजार से गुजरना होगा। बता दें कि हमीदिया की कैथलैब गर्मियों के मौसम में हर माह औसतन 90 दिल के मरीजों के प्रोसीजर किए जा रहे हैं। वहीं यह संख्या सर्दियों के माह में डेढ़ सौ तक पहुंच जाती है। हालांकि हमीदिया के कार्डियोलाजी विभाग के डाक्टरों के अनुसार मरीज परेशान न हों, इसलिए वैकल्पिक व्यवस्था की जा रही है।

इसके तहत बीएमएचआरसी और एम्स में जाकर हमीदिया के डाक्टर मरीजों की सर्जरी कर सकेंगे। बीते सप्ताह कैथलैब का एसी काम नहीं कर रहा था। जिसके कारण सर्जरी बंद थी। एसी ठीक होने के बाद मरीजों की सर्जरी की जा रही है। बीते एक वर्ष में पुराने भवन में लैब का संचालन पानी की कमी, रास्ता बंद होने, पावर सप्लाई कटने व एसी खराब होने के चलते एक दर्जन बार प्रभावित हुआ है। इस कैथलैब के लिए अब तक पांच माह में पांच अलग-अलग प्लान बनाए गए। अंत में पहले प्रस्ताव को ही फाइनल कर दिया गया। जनवारी के अंत में पुराने भवन में संचालित कैथलैब की शिफ्टिंग को पहला प्रस्ताव नए भवन ए की तीसरी मंजिल पर शिफ्ट करने का बनाया था। जिसे लेकर इंजीनियरों का तर्क था कि बिल्डिंग का निर्माण कैथलैब के मानकों के अनुरूप नहीं किया गया है।

सीवरेज टैंक सफाई के समय सफाई मित्रों की मृत्यु पर नगरीय विकास एवं आवास विभाग सख्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। रीवा में रविवार शाम सेप्टिक टैंक की सफाई करते समय दो सफाई मित्रों की मृत्यु के मामले को नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने गंभीरता से लिया है। विभागीय मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय के निर्देश पर आयुक्त श्री भरत यादव ने रीवा नगर निगम आयुक्त को कहा कि मृतकों के परिजनों को तत्काल 30-30 लाख रूपये क्षतिपूर्ति राशि दी जाये। श्री यादव ने सभी निकायों को सख्त हिदायत दी है कि ''हाथ से मैला उठाने वाले कर्मियों के नियोजन का प्रतिषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम-2013'' का पालन कराया जाये। आयुक्त श्री यादव ने कहा कि यह सुनिश्चित हो कि नगरीय क्षेत्रों में सीवर टैंक की सफाई मशीन द्वारा ही की जाये। प्रत्येक जिला स्तरीय नगरीय निकायों में गठित ईआरएसयू यह सुनिश्चित करें कि उनके अधीनस्थ प्रशिक्षित सीवर एंट्री प्रोफेशनल्स की टीम नियुक्त की गयी हैं। साथ ही सीवर एंट्री प्रोफेशनल्स के लिए सुरक्षा उपकरण भी उपलब्ध हैं। सीवर एंट्री प्रोफेशनल्स द्वारा सफाई के लिए अनुमति तब ही दी जाये जब मशीन द्वारा सफाई संभव नहीं हो। यदि किसी भी निकाय में निजी सेवा प्रदाताओं द्वारा सीवर एंट्री प्रोफेशनल्स की सेवा ली जाती है, तो उन्हें लिखित मे ईआरएसयू से अनुमति प्राप्त किया जाना और सुरक्षा उपकरण लिया जाना आवश्यक है। आयुक्त ने निर्देश दिए हैं कि सफाई के दौरान भारत किया जाये। इसी तारतम्य में स्वच्छ भारत मिशन शहरी के मिशन संचालक श्री अक्षय तेम्रवाल ने समस्त निकायों के प्रमुखों को निर्देश दिए हैं कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार सफाई मित्रों की सीवर लाइन या सीवर टैंक की सफाई के दौरान मृत्यु होने पर 30 लाख रूपये की क्षतिपूर्ति राशि दी जाये।

आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा योजना के नवीन पैकेज में अब 1 हज़ार 952 प्रक्रियाएँ शामिल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। आयुष्मान भारत निरामयम योजना को सरकार द्वारा समय-समय पर उन्नत उपचार और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से अद्यतन किया जाता रहा है। इसी क्रम में हमारे राज्य में हेल्थ बेनिफिट पैकेज- 2022 में नवीन उच्च स्तरीय प्रक्रियाओं और दवाओं को शामिल किया गया है। नए पैकेज के लागू होने से न केवल लाभार्थियों को अधिक सुलभ और प्रभावी चिकित्सा सेवाएं मिलेंगी, बल्कि चिकित्सालयों की क्षमता और गुणवत्ता में भी सुधार होगा, जिससे सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्रणाली को लाभ पहुंचेगा। मुख्य कार्यपालन अधिकारी आयुष्मान भारत योजना

श्रीमती अदिति गर्ग ने बताया है कि नवीन हेल्थ पैकेज को शीघ्र ही योजना अंतर्गत सम्बद्ध चिकित्सालयों के लिए खोला जाएगा।

नये हेल्थ बेनिफिट पैकेज-2022 में कुल 1952 प्रक्रियाओं को जोड़ा गया है, जो पहले 1670 थी।नए पैकेज में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सेवाओं और चिकित्सा प्रक्रियाओं को शामिल किया गया है, जिससे लाभार्थियों को व्यापक चिकित्सा सुविधाएं मिल सकेंगी। इनमें रिकॉम्बिनेंट टिशू प्लास्मिनोजेन एक्टिवेटर, टेनेक्टेप्लेस, लिपोसोमल एम्फोटेरिसिन, इम्यूनोग्लोबिन्स दवाएँ शामिल हैं। ये दवाएँ गंभीर और जटिल बीमारियों के इलाज में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। महत्वपूर्ण उच्च स्तरीय प्रक्रियाएं यूएसजी और सीटी गाइडेड पर्क्यूटेनियस रेडियोफ्रीक्वेंसी एब्लेशन यूएसजी और सीटी गाइडेड पर्क्यूटेनियस माइक्रोवेव एब्लेशन नये पैकेज में शामिल हैं। इन प्रक्रियाओं में उच्च गुणवत्ता वाले इम्प्लांट्स जैसे आरएफ़ प्रोब और माइक्रोवेव एंटेना शामिल हैं। नवीन पैकेज में उन्नत चिकित्सा तकनीकों इंटरवेंशनल न्यूरो रेडियोलोजी और बोन मेरो ट्रांसप्लांट जैसी आधुनिक उपचार पद्धति को जोड़ा गया है। प्राथमिक एवं सामुदायिक शासकीय चिकित्सालयों में भी आयुष्मान भारत योजना अंतर्गत ग्रामीण स्तर तक उपचार संभव होगा।

युवाओं को सनातन संस्कृति से जोड़ने के लिए अमर कथा का वितरण, मंदिरों में भी पाठ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संत हिरदाराम नगर (बैरागढ़) में सिंधी समाज के युवाओं को प्राचीन सनातन संस्कृति से जोड़े रखने के लिए उन्हें अमर कथा ग्रंथ उपलब्ध कराया जा रहा है। भगवान झूलेलाल के 26वें वंशज ठकुर साई मनीषलाल के आह्वान पर शुरू हुए इस अभियान में पूज्य सिंधी पंचायत भी सहयोगी बनी है। पंचायत के कार्यवाहक अध्यक्ष भरत आसवानी ने बताया कि साई मनीषलाल की प्रेरणा से हाल ही में अमर कथा ग्रंथ का छोटा संस्करण प्रकाशित हुआ है। इस कथा के माध्यम से समाज की नई पीढ़ी को वरुण अवतार भगवान झूलेलाल के अवतरण से लेकर जल एवं ज्योति की पूजा का महत्व बताया जा रहा है।

समाज के ऐसे युवाओं को भगवान झूलेलाल के वंशज बहिराणा पूजन कर देश की प्रगति एवं खुशहाली के पल्लव यानी सामूहिक प्रार्थना जरूर करते हैं। आसवानी के अनुसार समाज की नई पीढ़ी को अपनी सनातन परंपरों का ज्ञान देने के लिए अमर कथा ग्रंथ मील का पत्थर साबित हो रहा है। जिनका हाल ही में विवाह हुआ है, उन्हें भी अमर कथा ग्रंथ दिया जा रहा है। विवाह के दूसरे ही दिन उन्हें ग्रंथ देकर इसका नियमित पाठ करने की अपील की जा रही है ताकि वे गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी अध्यात्म से जुड़े रहें। उल्लेखनीय है कि कई सिंधी दरबारों में भी अब भगवान झूलेलाल के अवतरण पर केंद्रित अमर कथा का पाठ होने लगा है। जल्द ही इसे समाज के हर घर तक पहुंचाया जाएगा। पुराना बी वार्ड स्थित भगवान झूलेलाल, आसनलाल मंदिर में अमर कथा का मुख्य संस्करण स्थापित किया गया है। यहां श्रद्धालु नियमित रूप से इसका पाठ करते हैं।

नगर के प्रवेश द्वार पर लगा गंदगी का अंबार, जिले की छवि हो रही धूमिल

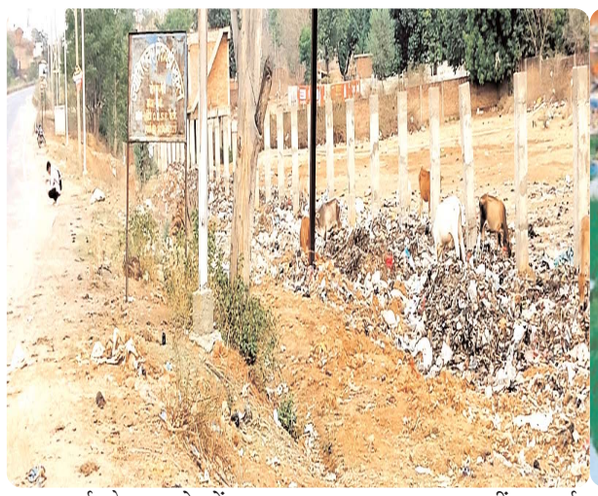

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। नगर के प्रवेश द्वार जमोड़ी तिराहा पर इन दिनो चारो ओर गंदगी का अंबार लगा हुआ। जिसकी सड़न दुर्गंध से ग्रामींणो एवं यहॉ से गुजरने वालों का हाल बेहाल है। नगर पालिका प्रशासन द्वारा देश के प्रधान मंत्री के स्वच्छता को लेकर सजोये गये सपने की धज्जियॉ उड़ाई जा रही हैं। नपा के उदासीन रवैया के चलते नगर से प्रतिदिन निकलने वाला गीला एवं सूखा कचरा यहॉ पर फेंका जाता है। जिसका ग्रामींणो के द्वारा महीनो से विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है, वहीं अब पनवार के ग्रामींण एवं जिला मुख्यालय के प्रबुद्धजन सड़को पर उतर कर विरोध प्रर्दशन करने की तैयारी कर रहे हैं।

आपको बताते चलें कि जहां-तहां कूड़े-कचरे का अंबार और सड़कों पर बेतरतीब ढंग से पसरी हुई गंदगी सीधी की पहचान बन रही है। बरसात का मौसम आ रहा है। इस दौरान अगर यही स्थिति बनी रही तो लोगों को खासा परेशानी उठानी पडेगी। साथ ही संक्रामक बीमारी फैसले का भी भय सताता रहेगा। आज भी हालात यह हैं कि नपा साफसफाई के मामले में बहुत पीछे है। जाहिर है कि नगर पालिका परिषद स्वच्छता के मामले में नगरवासियों की उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पा रही।

आपको बताते चलें कि नगर के कई घनी आबादी वाले वार्डो में भी लोग कचरे के ढेर, सड़ांध और बदबू के बीच अपना जीवन बसर करने को बाध्य हैं। जिस नगर परिषद पर स्वच्छ भारत अभियान को शहर में धरातल पर उतारने की जिम्मेदारी है। वह अभी तक कचरा प्रबंधन की समस्या का समाधान नहीं कर पाई है। जबकि लगभग दो वर्षों से नगर परिषद यह दावा करते रहा है, कि कचरा प्रबंधन के लिए व्यवस्था कर लिया गया है। कचरा को जमा किया जाएगा। उसके बाद गीले एंव सूखे कचरे का निष्पादन किया जायेगा। लेकिन यह सब सिर्फ घोषणा मात्र रह गया। उसे धरातल पर उतारा नहीं जा सका। हाल फिलहाल में यह धरातल पर उतरेगी, इसकी संभावना भी नहीं दिख रही है। क्योंकि इस सवाल पर नगर परिषद अभी मंद गति से चल रही है। नतीजा नगर परिषद क्षेत्र के लोगों को और कुछ दिन गंदगी और सडांध के बीच जीवन बसर करना होगा।

वाहन के द्वारा घरों से कचरा संकलन का अभाव -

नगर पालिका के 24 वार्डो में आज भी नपा द्वारा कचरा संकलन वाहन पहुॅचाने में असमर्थ जान पड़ रहा है। इसके साथ ही यहां किसी भी मोहल्ले में पर्याप्त मात्रा में कूड़ादान उपलब्ध नहीं है। इसका नतीजा है कि जहां-तहां कूड़े-कचरे फेंक दिये जा रहे हैं। कचरे का नियमित रूप से उठाव नहीं होने के कारण प्रायः सभी मोहल्लों में सफाई की स्थिति बदतर है। पिछले कई सालों से नगर परिषद ठेके के आधार पर स्वयंसेवी संस्था से सफाई कार्य करवा रही थी लेकिन कॉग्रेंस की नगर सरकार बनते ही सबंधित व्यक्ति द्वारा अपने हॉथ पीछे खींच लिये गयें।

फिलहाल नपा द्वारा अभी खुद साफसफाई करवा रही है। इस पर लगभग लाख खर्च करने के बाद भी सफाई व्यवस्था कारगर नहीं हुई है। नतीजा लोगों को परेशानी उठाना पड़ रही है।

बजरंग दल ने सौंपा ज्ञापन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। विश्व हिन्दू परिषद जिला अध्यक्ष गणेश सिंह, शैलेन्द्र सिंह विभाग संयोजक के मार्गदर्शन में महामहिम राष्ट्रपति के नाम माध्यम जिला प्रशासन के प्रतिनिधि को सौपा ज्ञापन। जिला संयोजक अभिषेक सिंह एवम जिला सह संयोजक रोहित राठौर ने ज्ञापन का वाचन किया। जम्मू कश्मीर में वैष्णों देवी कटरा से शिव खोडी जाते समय 9 जून को हिन्दू श्रद्धालुओं की बस पर क्रुर पाकिस्तान पोषित इस्लामिक जेहादी आतंकवादियों का कायराना हमला किया गया। जिसमें 10 निर्दोष हिन्दू तीर्थयात्री मारे गए, संपूर्ण देशवासियों को स्तब्ध करने वाली घटना से पूरा देश आहत है और तीव्र आक्रोश में है।

जम्मू काश्मीर लंबे समय से पाकिस्तान पोषित आतंकवाद का दंश झेल रहा है। धारा 370 हटने के बाद एक आशा की ज्योति जगी है, लेकिन लगता है उग्रवादियों का मनोबल अभी कम नहीं हुआ है। हिंदुओं को चिन्हित करके उनकी हत्या की घटनाएं बढ़ी हैं इन सब के पीछे स्पष्ट रूप से पाकिस्तान का हाथ है। देश के नई सरकार के शपथ के समय इस प्रकार का दुस्साहसिक कृत्य करके इस्लामी आतंकवादियों ने देश के संप्रभुता को चुनौती दी है।

सौंपे गये ज्ञापन के माध्यम से आगे बताया गया कि बजरंग दल इस कायराना कृत्य की तीव्र निंदा करते हुए आपसे निवेदन करता है की इस प्रकार की गतिविधियों पर पूर्ण नियंत्रण पाने के लिए निर्णायक और कठोर कदम उठाने का केंद्र सरकार को निर्देश दें तथा इस प्रकार के तत्वों को सरंक्षण देने वाले आंतरिक व विदेशी तत्वों का भी कठोरता से समुचित इलाज हो, ऐसा केन्द्र सरकार से सुनिश्चित कराने का आग्रह करें। उक्त कार्यक्रम में रविराय बहादुर सिंह जिला उपाध्यक्ष, राजेंद्र सोनी जिला कोषाध्यक्ष, अजीत सिंह जिला विशेष संपर्क प्रमुख, उदय शंकर मिश्रा जिला गोरक्षा प्रमुख, यग्यसेन गुप्त मन्दिर अर्चक पुरोहित, भास्कर सिंह नगर अध्यक्ष मुकेश नामदेव नगर मंत्री, अशोक गुप्ता जिला सुरक्षा प्रमुख, शेखर भारती नगर संयोजक बजरंग दल, राज राखन गुप्ता मन्दिर अर्चक पुरोहित, विनायक गुप्ता, राकेश कुशवाहा शुभम श्रीवास्तव संदीप श्रीवास्तव उपस्थिति रहे।

उक्त जानकारी जिला प्रचार प्रसार प्रमुख धीरेश मिश्रा द्वारा दी गई।

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत शीतलदास तालाब में कार्यक्रम आयोजित

सांसद तथा विधायक ने किया पौधरोपण, लोगों से जल संरक्षण एवं संवर्धन अभियान में सहभागिता की अपील की

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत बुधवार को नगर पालिका सीधी के शीतलदास तालाब के गहरीकरण और साफ सफाई का अभियान प्रारंभ किया गया। कार्यक्रम में नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा द्वारा नगरवासियों से अपील की गई कि जल के संरक्षण के हर संभव प्रयास किए जाएं। उन्होंने कहा कि अगर आज जल का संरक्षण नहीं किया गया तो आगामी भविष्य में इसके भयंकर दुष्परिणाम होंगे और संभवतः तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए हो सकता है। इसके लिए आज से ही हम जल संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाएं। साथ ही साथ अपने आस-पास पौधरोपण भी करें। सांसद द्वारा उपस्थित जनों को जल संरक्षण की शपथ भी दिलवाई गई।

विधायक सीधी रीती पाठक द्वारा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जल संरक्षण को जन आंदोलन बनाने के लिए नगरवासियों से अपील की गई। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम जनभागीदारी के साथ होना चाहिए सिर्फ शासन के द्वारा ही प्रयास करने से सफलता नहीं मिलेगी। कार्यक्रम में सभी की सहभागिता होनी चाहिए जिससे यह कार्यक्रम सफल हो सके। विधायक ने कहा कि सरकार द्वारा कार्यक्रम की निगरानी तथा उचित क्रियान्वयन के लिए जनता की सहभागिता अपेक्षित की जाती है। लोगों की सहभागिता से अभियान को अपेक्षित परिणाम मिलते हैं।

कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा लोगों से अभियान में सक्रिय सहभागिता की अपील की गई है। उन्होंने नगर पालिका सीधी को निर्देशित किया कि तकनीकी रूप से वर्तमान का ही नहीं बल्कि भविष्य को ध्यान में केंद्रित रखते हुए कार्ययोजना बनाए।

आयोजित कार्यक्रम में जनपद सीधी के अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह परिहार, पार्षद कुमुदनी सिंह, पूनम सोनी, रजनीश श्रीवास्तव, बाबूलाल कुशवाहा, आनंद परियानी, सहित गणमान्य नागरिक देवकुमार सिंह चौहान, के के तिवारी, लालचंद गुप्ता, विश्वबंधुधर द्विवेदी, पूर्व पार्षद अब्दुल मजीद, कनाहिया सिंह, पुन्नू खान द्वारा सहभागिता की गई। इस अवसर पर अपर कलेक्टर राजेश शाही, मुख्य नगर पालिका अधिकारी मिनी अग्रवाल, तहसीलदार गोपद बनास जान्हवी शुक्ला सहित नगर पालिका सीधी के अधिकारी/कर्मचारी एवं वार्ड से नगरवासी उपस्थित रहे।

सांसद ने की योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा

रोड और रेल कनेक्टिविटी बेहतर होने से जिले के विकास के नए द्वारा खुलेंगे : सांसद

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित परिचयात्मक बैठक में विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। सांसद डॉ मिश्रा द्वारा रीवा-सीधी-सिंगरौली रेलवे परियोजना, सीधी-सिंगरौली राष्ट्रीय राजमार्ग तथा सोन नदी जोगदहा में निर्माणाधीन पुल की विस्तृत समीक्षा की गई। डॉ मिश्रा ने कहा कि जिले के विकास के लिए उपरोक्त परियोजनाओं का समय से पूर्ण होना अत्यंत आवश्यक है। रोड और रेल कनेक्टिविटी बेहतर रहने से जिले के विकास के नए द्वारा खुलेंगे।

सांसद ने कहा कि उक्त तीनों परियोजनाएं प्राथमिकता के केंद्र में रहेंगी। सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय से योजनाओं को गति प्रदान करें। सांसद ने सीधी जिला मुख्यालय तक रेलवे लाइन का कार्य पूर्ण करने के लिए 15 महीने की समय-सीमा निर्धारित की है। इसी प्रकार सीधी-सिंगरौली राष्ट्रीय राजमार्ग में गोपद नदी में निर्माणाधीन पुल को 30 जून 2024 तक पूर्ण करने तथा सोन नदी जोगदहा में निर्माणाधीन पुल को इस वर्ष के अंत तक पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया। सांसद ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि उपरोक्त योजनाओं के प्रगति की प्रत्येक 15 दिवस में समीक्षा की जाएगी। उक्त को दृष्टिगत रखते हुए रोडमैप बनाकर कार्यों में प्रगति लाएं। सांसद ने सतत विद्युत आपूर्ति तथा सभी बसाहटों में पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही सांसद ने केंद्र शासन एवं राज्य शासन की सभी जनकल्याणकारी योजनाओं की पहुंच प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक सहजता से सुनिश्चित करने के लिए कहा है। सांसद ने कहा कि इस दिशा में पूरी संवेदनशीलता और सजगता के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। प्रत्येक पात्र व्यक्ति को पात्रतानुसार योजनाओं का लाभ मिले। जानकारी के अभाव में हितग्राहियों में किसी भी प्रकार का भटकाव नहीं हो। सांसद ने कहा कि उनके लिए जनता जनार्दन का हित ही सर्वोपरि है।

कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने आश्वस्त किया है कि सभी विभाग आपसी समन्वय से योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित करते हुए अपेक्षित परिणाम देंगे। टाइम लाइन के अनुसार कार्यों को निर्धारित समयावधि में पूर्ण किया जावेगा।

बैठक में अपर कलेक्टर राजेश शाही, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, सिहावल प्रशांत त्रिपाठी, कुसमी एसपी मिश्रा, मझौली आर पी त्रिपाठी सहित सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

नव निर्वाचित सांसद स्कूली बच्चों से हुए रूबरू

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने बुधवार को प्रातः 9 बजे से लेकर 2 बजे तक क्षेत्र से आई हुई जनता जनार्दन की समस्याएं सुनी और उनका धन्यवाद किया साथ ही उनकी बधाई स्वीकार की। कुछ समस्याओं का निराकरण नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने त्वरित अधिकारियों को निर्देशित कर किया और कुछ समस्याओं का निराकरण संबंधित विभाग अध्यक्षों को पत्र लिखकर यथाशीघ्र समस्या समाप्त करने हेतु पत्र लिखें। इस दौरान क्षेत्र से आई हुई सैकड़ो जनता ने इसमें बड़ी संख्या में महिलाएं भी थी संतुष्ट होकर नवनिर्वाचित सांसद के प्रति आभार ज्ञापित किया।

इस दौरान निजी विद्यालय की डायरेक्टर डॉ रंजना मिश्रा के साथ नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने नन्हे मुन्ने स्कूली बच्चों से मुलाकात कर उनसे मीठी.मीठी बातें की। उन्हें देश का भविष्य बताया। वहीं स्कूली बच्चे सरल, सहज सांसद को अपने बीच पाकर काफी प्रसन्न दिखे। कुछ बच्चों ने सेल्फी भी ली।

13 जून को सांसद डॉक्टर राजेश मिश्रा रहेंगे सिंगरौली प्रवास पर: नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा 13 जून को सिंगरौली जिले के प्रवास पर रहेंगे। जहां पीएम श्री पर्यटन वायु सेवा को हरी झंडी दिखाकर योजना का शुभारंभ करेंगे। सासंद डॉक्टर मिश्रा ने कहा कि अब सिंगरौली, रीवा, भोपाल वायु सेवा के लिए खुल जाएगा।

डीएसपी ने रामड़ीह में लगाई जन चौपाल, सुनी समस्यायें

मीडिया आडीटर, सीधी निप्र। पुलिस अधीक्षक डॉ रविन्द्र वर्मा द्वारा कई बार रात्रि में थानो को औचक निरीक्षण कर समस्त राजपत्रित अधिकारियों को भी उनके अनुभाग के थानो का रात्रि में अचानक भ्रमण कर थाना क्षेत्र में ही रूकने का निर्देश दिया गया था। पुलिस अधीक्षक के निर्देशान में उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय गायत्री तिवारी द्वारा मंगलवार की दरमियानी रात बहरी थाना अंतर्गत ग्राम पंचायत भवन रामड़ीह में जन चौपाल का आयोजन किया गया। चौपाल में सीएम हेल्पलाईन की शिकायतकर्ताओं की शिकायत सुन उनका निराकरण किया गया साथ ही चौपाल में आये ग्रामीणो से पुलिस से संबंधित शिकायते जानकर उनका निराकरण किया गया।

उप पुलिस अधीक्षक रामडीह पंचायत भवन में ही रात्रि मुकीम कर क्षेत्र के गतिविधियों एवं कानून व्यवस्था के बारे में जानकरी लेकर उनके समाधान के बारे में थाना प्रभारी बहरी को निर्देशित किया गया। इस दौरान थाना प्रभारी बहरी निरीक्षक श्रीमती रीता त्रिपाठी मय स्टॉफ एवं ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

जीवन का क्षण प्रति क्षण समर्पित कर, विकास की लिखेंगे नई इबारत : नव निर्वाचित सांसद

आपसी समन्वय के साथ होगा क्षेत्र का विकास - सीधी विधायक

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी लोकसभा संसदीय क्षेत्र सीधी सिंगरौली और ब्योहारी के संपूर्ण विकास के लिए अपने आप को खापा दूंगा। हमारे सभी विधायक कंधे से कंधे मिलाकर विकास की नई इबारत लिखेंगे। सीधी की जनता ने जो स्नेह, प्यार और अपना बहुमूल्य मत हमें दिया है। उसके बदले मेरा क्षण क्षण, पल प्रतिपल केवल और केवल संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए होगा। सीधी लोकसभा संसदीय क्षेत्र में विकास की नई इबादत अगले 5 वर्षों में हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के साथ मिलकर लिखेंगे।

उक्त आशय के उद्गार वरिष्ठ भाजपा नेता और सीधी लोकसभा संसदीय क्षेत्र के नवनिर्वाचित सांसद डॉक्टर राजेश मिश्र के प्रथम नगर आगमन के उपलक्ष में आयोजित आभार और धन्यवाद सभा के दौरान स्थानीय गांधी चौक पार्किंग स्थल में संबोधित करते हुए कहीं। सीधी सांसद डॉ राजेश मिश्रा इस दौरान पूरे जोश और उत्साह के साथ जनता के कल्याण के लिए संवेदनशील भाव में दिखे।

सांसद पहले दिन ही दिखे एक्शन में, नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने कहा की मैं आराम करने के लिए सांसद नहीं बना हूं। मैं क्षेत्र की जनता की सेवा और क्षेत्र के विकास के लिए कृत संकल्पित हूं। मैं दिल्ली पहुंचने कर प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह के अगले दिन मैंने रेल मंत्रालय से मिलकर रेलवे की बात रखी। जिसे रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष तत्काल स्वीकार करते हुए तत्काल दिशा निर्देश जारी किये। जिसके कारण रेल का फेरा बढा। अब सिंगरौली से दिल्ली और सिंगरौली से भोपाल चलने वाली ट्रेनों के फेर बढ़े हैं और सीधी सिंगरौली रेल परियोजना को अति शीघ्र पूरा हो, इसके लिए मैंने उनका ध्यान आकृष्ट कराया।

मोदी सरकार 5 वर्ष चलेगी डंके की चोट पर: नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने विशाल जन समुदाय का आभार जपित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी एनडीए की सरकार आगामी 5 वर्षों तक चलेगी और विकास के नए.नए सोपान स्थापित करेगी और देश को विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनाएंगे।

जगह-जगह हुआ भव्य स्वागत: नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा का सीधी विधायक रीती पाठक सहित सैकड़ो पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं जनता जनार्दन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर विश्वास किया और प्रचंड मतों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाया।

जगह-जगह हुआ भव्य स्वागत: नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा के विशाल वाहन काफिले का चुरहट, सेमरिया और सीधी नगर मंडल के दर्जनों स्थानों पर शानदार आतिशबाजी, गाजे बाजे के बीच जोरदार स्वागत और अभिनंदन हुआ। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री डॉ मनोज मिश्रा एवं आभार प्रदर्शन जिला महामंत्री विनोद साकेत ने किया। पदाधिकारियों ने माल्यार्पण एवं पुष्प गुच्छ देकर अभिनंदन किया। वहीं सांसद डॉक्टर राजेश मिश्रा भी दोनों हाथ जोड़कर आभार व्यापित करते हुयें दिखे और आगे बढ़कर अभिनंदन किया।

सांसद डॉक्टर राजेश मिश्रा के साथ करेंगे सीधी विधानसभा का संपूर्ण विकास : रीती पाठक

सीधी विधायक रीती पाठक ने आभार जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ राजेश मिश्रा सरल, सहज एवं अद्भुत प्रतिभा के धनी हैं। कर्मठ व्यक्तित्व के धनी नवनिर्वाचित सांसद डॉ राजेश मिश्रा से मिल बैठकर हम सभी पार्टी के साथ सीधी विधानसभा को बेहतर बनाने के लिए कार्य करेंगे। सीधी विधायक श्रीमती रीती पाठक ने विपक्षियों पर प्रहार करते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव में इंडी गठबंधन के लोगों ने बहुत भ्रामक प्रचार करते हुए चुनाव का माहौल दूषित करने का प्रयास किया किंतु भारत की

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत करवाही में श्रमदान कार्यक्रम आयोजित

सीधी। पुरानी जल संरचनाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में जल गंगा अभियान का आयोजन किया जा रहा है। सीधी जिले के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में जनप्रतिनिधियों की अगुवाई में कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

विचार

सामाजिक कलंक है बालश्रम?

वैश्विक समस्या है बाल श्रम? किसी भी मुल्क के माथे पर सामाजिक कलंक भी है, फिर चाहें वह देश विकसित हो या विकासशील? आज से 19 वर्ष पहले यानी सन-2002 को इस बुराई के विरुद्ध प्रतिवर्ष 12 जून के दिन 'अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन' की पहल पर 'विश्व बालश्रम निषेध दिवस' मनाने का आरंभ हुआ। इस दिवस का मकसद चाइल्ड लेबर के सभी रूपों को रोकने के लिए जनमानस को जागरूकता करना था। जागरूकता को ध्यान में रखकर ही 2024 की थीम 'अपनी प्रतिबद्धताओं पर कार्य करें% बाल श्रम समाप्त करें, निर्धारित की गई है। आंकड़ों की माने तो बालश्रम एशिया और प्रशांत क्षेत्र में दूसरे स्थान पर काबिज है। यहां कुल 7 फीसदी बच्चे विभिन्न किस्म की मजदूरी में संलिप्त है। यही कारण है कि 62 मिलियन बच्चों की बड़ी आबादी आज भी शिक्षा से महरूम है। रोकथाम के लिहाज से प्रयासों में कमी नहीं है, प्रयास बहुतेरे किए जाते हैं कि बच्चों को बाल श्रम की धधकती भट्टियों से आजाद करवाया जाएं। लेकिन परिवारों के मध्य संघर्ष, संकट और आर्थिक मजबूरियां उन्हें बाल श्रम करने को विवश करती हैं। बाल श्रम रोकने में सरकारी व सामाजिक दोनों के प्रयास नाकाफी न रहें, सभी को ईमानदारी से इस दायित्व में आहुति देनी चाहिए। कानूनों की कमी नहीं है, कई कानून सक्रिय हैं। बाल श्रम अधिनियम-1986 के तहत ढाबों, घरों, होटलों में बाल श्रम करवाना दंडनीय अपराध है। बावजूद इसके लोग बाल श्रम को बढ़ावा देते हैं। बच्चों को वह अपने प्रतिष्ठिनों में इसलिए काम दे देते हैं क्योंकि उन्हें कम मजदूरी देनी पड़ती है। लेकिन वह यह भूल बैठते हैं कि वह कितना बड़ा अपराध कर रहे हैं। बाल मजदूरी रोकने के लिए 1979 में बनी गुरुपाद स्वामी समिति ने बेहतरीन काम किया था। उसके बाद अलग मंत्रालय, आयोग, संस्थान और समितियां बनीं, लेकिन बात फिर वहीं आकर रुक जाती है कि जब तक आमजन की सहभागिता नहीं होगी, सरकारी प्रयास भी नाकाफी साबित होंगे। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय विगत कई दशकों से बाल श्रम को समाप्त करने में ईमानदारी से प्रतिबद्धता व्यक्त कर रहा है। बावजूद इसके संपूर्ण विश्व में आज भी करीब 160 मिलियन बच्चे बाल श्रम की भट्टी में तप रहे हैं। दुनिया भर में करीब दस में से एक बच्चा आज भी किसी न किसी रूप में मजदूरी करने को मजबूर है। बाल श्रम से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर भी बेहताशा प्रयास हो रहे हैं। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा लगातार कार्यान्वित शिक्षा, कला और मीडिया के माध्यम से बच्चों के अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। लेकिन फिर भी बाल श्रम की समस्या थमने के बजाय और बढ़ रही है। हिंदी फिल्म 'बूट पॉलिश' का एक गाना है कि 'नन्हें मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है, मुट्ठी में है तकदीर हमारी' के बोल न सिर्फ बालश्रम की भट्टियों में धधकते बचपन के प्रति संवेदना जगाते हैं, बल्कि हुकूमतों के लिए बाल समस्याओं पर अंकुश न लगाने व उनसे जुड़े उत्पीड़न और अपराध के प्रति घोर निराशा भी व्यक्त करते हैं। बाल मजदूरी वैश्विक समस्या का रूप ले चुकी है। इसलिए सिर्फ सरकार-सिस्टम पर सवाल उठाने से अब काम नहीं चलने वाला? समाधान के विकल्प सभी को मिलकर खोजने होंगे? सड़कों पर भीख मांगते बच्चे, ईट भट्ठों पर काम करते नौनिहाल, विभिन्न अपराधों में लिप्त बच्चे व शिक्षा से महरूम बच्चों को देखकर मुंह मोड़ने के बजाय है, हुकूमतों को चेताना होगा। बच्चों से मुंह फेरना ही हमारा सबसे बड़ा अपराध है। हमारी चुप्पी ही बालश्रम जैसे कृत्य को बढ़ावा देती है। ऐसे बच्चों के बचपन की तुलना थोड़ी देर के लिए हम अपने बच्चों से करें, तो फर्क अपने आप महसूस कर सकेंगे। ऐसा करने से अपने भीतर बदनसीब बच्चों के प्रति संवेदना जगेगी और उनसे जुड़े जुल्मों के खिलाफ अवाज उठाने का संबल मिलेगा। आंखों के सामने किसी बच्चे का बचपन खो जाना, हमारे लिए सबसे बड़ी शर्म वाली बात है। इस सामाजिक बुराई से समाज को वाकिफ हो जाना चाहिए कि बाल श्रम रोकना केवल सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है, प्रत्येक इंसान का मानवीय दायित्व भी है। ये सच है कि समस्या किसी एक के बूते सुलझने वाली नहीं? इसके लिए सामाजिक चेतना, जनजागरण और जागरूकता की जरूरत है।

संसद में दागी नेताओं की संख्या बढ़ना चिन्ताजनक

ललित गर्ग

देश में 18वीं लोकसभा चुनी जा चुकी है, मंत्रिमंडल का गठन हो चुका है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और रिकॉर्ड संख्या में मतदाता होने के गर्व करने वाली स्थितियां हैं वहीं चिन्ताजनक, विचलित एवं परेशान करने वाली स्थितियां भी हैं। खबर आई है कि लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में पहुंचने वाले 543 सांसदों में 46 फीसदी आपराधिक रिकॉर्ड रखते हैं जो पिछली बार से तीन प्रतिशत अधिक है। भारतीय राजनीति में आपराधिक छवि वाले या किसी अपराध के आरोपों का सामना कर रहे लोगों को जनप्रतिनिधि बनाए जाने एवं उन्हें राष्ट्र-निर्माण की जिम्मेदारी दिया जाना-हर नागरिक के माथे पर चिंता की लकीर लाने वाली है। क्या इस स्थिति में देश की लोकतांत्रिक शुचिता एवं पवित्रता की रक्षा हो पाएगी? क्या हम आदर्श एवं मूल्यपरक समाज बना पाएंगे? क्या ये दागदार नेता एवं जन-प्रतिनिधि कालांतर हमारी व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे?

चुनाव प्रक्रिया से जुड़े मसलों का विश्लेषण करने वाली सचेतक संस्था एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की ताजा रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2019 में चुने गये सांसदों में जहां 233 यानी 43 फीसदी ने अपने विरुद्ध आपराधिक मामले दर्ज होने की बात स्वीकार की थी, वहीं अठाहरवीं लोकसभा के लिये चुने गए 251 सांसदों ने आपराधिक मामले दर्ज होने की बात मानी है। जो कुल संख्या का 46 फीसदी बैठती है। आज भारत की आजादी के अमृतकाल का एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि अपहरण के आरोपी अदालत में पेश होने की जगह मंत्री पद की शपथ लेने पहुंच जाते हैं। अरविन्द केजरीवाल जैसे नेता आम चुनाव में कहते हैं कि आप लोग बड़ी संख्या में आम आदमी पार्टी को वोट दें ताकि मैं जेल जाने से बच जाऊं। हम ऐसे चरित्रहीन एवं अपराधी तत्वों को जिम्मेदारी के पद देकर कैसे सुशासन एवं ईमानदार व्यवस्था स्थापित करेंगे? कैसे आम जनता के विश्वास पर खरे उतरेंगे? कैसे संसद में दागियों के पहुंचने के लिये द्वार बंद होंगे? दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की सजग पहल पर ही वर्ष 2020 से सभी राजनीतिक दल लोकसभा व विधानसभा के उम्मीदवारों के आपराधिक रिकॉर्ड को प्रकाशित करने लगे है। निश्चित ही इस आदेश का मकसद देश की राजनीति को आपराधिक छवि वाले नेताओं से मुक्त करना ही था। लेकिन वास्तव में ऐसा हुआ नहीं क्योंकि तमाम राजनीतिक दलों की प्राथमिकता जीतने वाले उम्मीदवार थे, अब चाहे उनका आपराधिक रिकॉर्ड ही क्यों न हो। बड़ा प्रश्न है कि आखिर राजनीति में तब कौन आदर्श उपस्थित करेगा? क्या हो गया उन लोगों को जिन्होंने सदैव ही हर कुर्बानी करके आदर्श उपस्थित किया। लाखों के लिए अनुकरणीय बने, आदर्श बने। चाहे आज़ादी की लड़ाई हो, देश की सुरक्षा हो, धर्म की सुरक्षा हो, अपने वचन की रक्षा हो अथवा अपनी संस्कृति और अस्मिता की सुरक्षा का प्रश्न हो, उन्होंने फर्ज़ और वचन निभाने के लिए अपना सब कुछ होम दिया था। महाराणा प्रताप, भगत सिंह, दुर्गादास, छत्रसाल, शिवाजी जैसे वीरों ने अपनी तथा अपने परिवार की सुख-सुविधा को गौण कर बड़ी कुर्बानी दी थी। गुरु गोविन्दसिंह ने अपने दोनों पुत्रों को दीवार में चिनवा दिया और पन्नाधाय ने अपनी स्वामी भक्ति के लिए अपने पुत्र को कुर्बान कर दिया। ऐसे लोगों का तो मन्दिर बनना चाहिए। इनके मन्दिर नहीं बने, पर लोगों के सिर श्रद्धा से झुकते हैं, इनका नाम आते ही। लेकिन आज जिस तरह से हमारा राष्ट्रीय जीवन और सोच विकृत हुए हैं, हमारी राजनीति स्वार्थी एवं संकीर्ण बनी है, हमारा व्यवहार झूठा हुआ है, चेहरों से ज्यादा नकाबें ओढ़ रखी हैं, उसने हमारे सभी मूल्यों को धराशायी कर दिया। राष्ट्र के करोड़ों निवासी देश के भविष्य को लेकर चिन्ता और ऊहापोह में हैं। वक्त आ गया है जब देश की संस्कृति, गौरवशाली विरासत को सुरक्षित रखने के लिए कुछ शिखर के व्यक्तियों को भागीरथी प्रयास करना होगा। दिशाशून्य हुए नेतृत्व वर्ग के सामने नया मापदण्ड रखना होगा। अगर किसी हत्या, अपहरण या अन्य संगीन अपराधों में कोई व्यक्ति आरोपी है तो उसे राजनीतिक बता कर संरक्षण देने की कोशिश या राजनीतिक लाभ उठाने की कुचेष्टा पर विराम लगाना ही होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार एवं अपराध मुक्त राजनीति को सदैव प्राथमिकता दी लेकिन चुनाव जीतने के रण में वे भी अपराधी राजनेताओं को प्रश्रय देते हुए दिखे हैं। सभी राजनीतिक दलों ने ही दागी उम्मीदवारों को टिकट दिए हैं। जो राजनीतिक दलों की कथनी और करनी के भारी अंतर को ही उजागर करता है। सवाल है कि देश के लिये नीति निर्धारण करने वाले ऐसे दागी लोग हमारे भाग्यविधाता बने रहेंगे तो हमारा भविष्य कैसा होगा? क्या आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोग जनप्रतिनिधि चुने जाने के बाद हमारी कानून-व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? क्या होगा हमारे समाज व व्यवस्था का भविष्य? क्यों तमाम आदर्शों की बात करने वाले और दूसरे दलों के नेताओं की कारगुजारियों पर सवाल उठाने वाले नेता राजनीति को अपराधियों के वर्चस्व से मुक्त कराने की ईमानदार पहल नहीं करते? क्यों सभी राजनीतिक दल भारतीय लोकतंत्र में शुचिता एवं पवित्रता के लिये सहमति नहीं बनाते? निश्चित रूप से यदि समय रहते इस दिशा में कोई गंभीर पहल नहीं होती तो आने वाले वर्षों में दागियों का यह प्रतिशत लगातार बढ़ता ही जाएगा। इसके साथ ही बड़ा संकट यह भी है कि देश के निचले सदन में येन-केन-प्रकारेण करोड़पति बने नेताओं का वर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है।

अपने सांसदों की जुबानी जंग पर अखिलेश यादव क्यों चुप?

अजय कुमार ।

राजनैतिक दलों के भीतर हार के बाद हाहाकार होते तो कई बार देखा गया है, लेकिन रिकार्ड जीत के पश्चात भी पार्टी की टॉप लीडरशिप के बीच हंगामा खड़ा हो जाये तो उस पर लोग चटकारे तो लेते ही हैं। बात समाजवादी पार्टी के जेल में बंद दिग्गज नेता आजम खान और रामपुर के नये नवेले सांसद के बीच टकराव की हो रही है, जिसमें अखिलेश की खामोशी बड़ा फैक्टर नजर आ रहा है। कहने को, यह दो दिग्गजों का अपना मत हो सकता है, लेकिन राजनीतिक गलियारों में इसे सपा में चल रही गुटबाजी के चलते वर्चस्व का कारण माना जा रहा है, जिसके भविष्य में और भी तूल पकड़ने की संभावना है।दरअसल, लोकसभा चुनाव के परिणाम को आए अभी हफ्ता भर हुआ है और सपा के दो सांसदों में पार्टी महासचिव आजम खां को लेकर जुबानी जंग छिड़ गई है। यह बात पार्टी फोरम में होती, तो ठीक थी। बयानबाजी सार्वजनिक रूप से की गई है।

रामपुर के नवनिर्वाचित सांसद मोहिबुल्लाह नदवी ने आजम खान को सुधार गृह में बताते हुए दुआ की जरूरत बताई। जबकि मुरादाबाद की सांसद रुचि वीरा ने आजम से मिलने जाने की बात कहते हुए मोहिबुल्लाह को ही अपरिपक्व बता दिया। वैसे यह झगड़ा चुनाव के दौरान भी दबी जुबान से समाजवादी नेताओं के बीच चर्चा का विषय रहा था। दरअसल, रामपुर में आजम खां का मजबूत सियासी दुर्ग रहा है। वह खुद तो लंबे अरसे तक विधायक और सांसद रहे, अपने बेटे और करीबियों को भी उन्होंने लखनऊ के सदन तक पहुंचाया है। पत्नी को भी राज्यसभा सदस्य बनवाया। रामपुर में सपा का मतलब आजम ही माने जाते रहे हैं, लेकिन इस बार रामपुर में अखिलेश ने आजम की इच्छा के विरूद्ध नदवी को टिकट दिया था। ऐसा इसलिये हो पाया था क्योंकि 2019 के बाद से आजम खान पर ताबड़तोड़ मुकदमे दर्ज होने के बाद उनके दुर्ग में कई नेता सेंधमारी में लगे हुए हैं। स्थिति यह हुई कि इस लोकसभा चुनाव में उनकी मंशा के विपरीत सपा के शीर्ष नेतृत्व ने मोहिबुल्लाह को सपा प्रत्याशी बनाया और आजम खेमे के विरोध के बाद भी उन्हें रिकॉर्ड मतों से जिता लिया गया। बताते चलें अबकी से नवाब खानदान और आजम परिवार इस चुनाव से सीधे नहीं जुड़े थे, इसलिए पहले से ही माना जा रहा था कि जीतने वाला रामपुर की राजनीति को धार देने वाला नया धुरंधर होगा। मोहिबुल्लाह नदवी के आजम को सुधार गृह में बताना इसी दिशा में एक कदम माना जा रहा है। नदवी की आजम के खिलाफ इतनी घटिया बयानबाजी करने की हिम्मत इस लिये बढ़ी क्योंकि वह आजम की मर्जी के बिना चुनाव जीतने में सफल रहे थे। आजम खेमे के विरोध के बाद भी उन्होंने रामपुर में जीत हासिल की। जिस रामपुर के मुस्लिम मतदाता कभी आजम खां के साथ रहते थे, आज वह मोहिबुल्लाह के साथ हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए अपनी अलग पहचान के लिए यह बयान उनकी रणनीति का हिस्सा है, क्योंकि सपा के जिलाध्यक्ष, प्रदेश के दो सचिव और विधायक भी आजम खां के इशारे पर ही पार्टी के विरोध में आ गए थे और चुनाव बहिष्कार करने तक की घोषणा कर दी थी। उधर, मुरादाबाद की नई नवेली सांसद रुचि वीरा ने रामपुर के निर्वाचित सांसद को अपरिपक्व बताकर जाहिर कर दिया कि वह आजम खां के साथ खड़ी हैं। रूचि वीरा को बेहद नाटकीय ढंग से मुरादाबाद के उस समय के सांसद का ऐन मौके पर टिकट काट कर मैदान में उतारा गया था। उन्हें यह टिकट आजम खां की पैरवी से ही टिकट मिला था। पार्टी में मजबूत पकड़ बनाए रखने के लिए उन्हें इस सहारे की जरूरत भी है, लेकिन मुरादाबाद की राजनीति में इसके साइड इफेक्ट हो सकते हैं, क्योंकि निवर्तमान सांसद डा. एसटी हसन अपना टिकट कटने की वजह आजम खां को ही मानते हैं। उन्होंने चुनाव में रुचि वीरा का विरोध तो नहीं किया, लेकिन समर्थन भी नहीं दिया। वह पूरे प्रचार के दौरान घर पर ही बैठे रहे। इसके अलावा मुरादाबाद और आसपास के जिलों में सक्रिय पार्टी के मुस्लिम नेताओं की एक लॉबी अंदरखाने आजम के बजाए पार्टी में अपना वर्चस्व चाहती है।

सफल भी एवं सक्षम भी होगी मोदी की तीसरी पारी

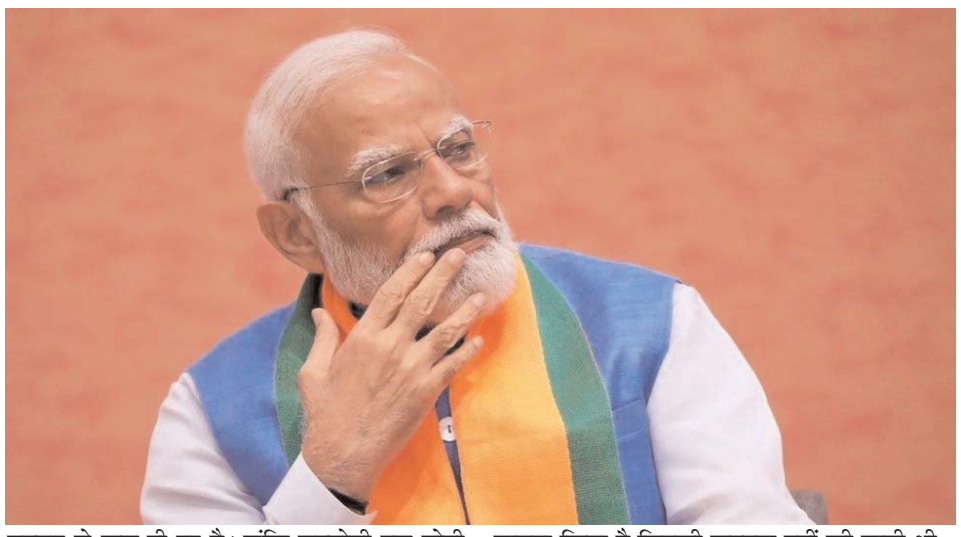

एक और इतिहास रचते हुए नरेन्द्र मोदी ने तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। इसके साथ ही वह पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद लगातार तीसरा कार्यकाल हासिल करने वाले पहले प्रधानमंत्री बन गए। यह देश ही नहीं दुनिया के लिए एक अद्भुत एवं विलक्षण राजनीतिक घटना है, क्योंकि दुनिया में बहुत कम शासनाध्यक्षों को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। मोदी के इस तीसरे कार्यकाल पर देश-दुनिया की नजरें इसलिये भी टिकी हैं कि मोदी सरकार 3.0 का अजेंडा पिछली गठबंधन सरकारों से अलग होकर भी सशक्त है। 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को लेकर काम करने वाली इस सरकार में 71 मंत्रियों ने प्रधानमंत्री के साथ शपथ ली। मोदी के करिश्माई नेतृत्व में पिछले दस साल में देश को विकास के कहीं ज्यादा ऊंचे मुकाम पर खड़े करते हुए दुनिया को चौंकाया है। 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से हम पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुके हैं। जीडीपी के आकार के हिसाब से हमने पिछले साल ब्रिटेन को पीछे छोड़ा और 2026 तक जापान तो 2027 तक जर्मनी को पीछे छोड़ने की उम्मीद कर रहे हैं। इन लक्ष्यों की ओर तेजी से कदम बढ़ाना नई सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसक साथ ही सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास इस सरकार का ध्येय है।

प्रधानमंत्री मोदी इस बार गठबंधन सरकार का नेतृत्व करते हुए एक नया इतिहास बनायेंगे, उम्मीद की जा रही है कि बिना बाधा एवं गठबंधन की शर्तों के वे देश-विकास के अपने एजेंडे को सफलतापूर्वक एक नई ऊंचाई देंगे। उनकी लोकसभा चुनाव-2024 की उपलब्धि की महत्ता इसलिये भी कम नहीं हो जाती, क्योंकि भाजपा बहुमत से कुछ ही दूर है। चूंकि सहयोगी दल मोदी सरकार को सहयोग और समर्थन देने के लिए प्रतिबद्ध हैं और मंत्रियों का चयन सुगम तरीके से हो गया इसलिए यह आशा की जाती है कि मोदी की तीसरी पारी भी सुगमता एवं त्वरित गति से चलेगी। इसका एक कारण यह भी है कि उनके पास व्यापक राजनीतिक अनुभव है और चुनौतियों का सामना करने की क्षमता तथा समन्वय की राजनीति करने का कौशल भी। गठबंधन दलों को भी समन्वय एवं सौहार्द का वातावरण बनाना होगा, इसी में उनका राजनीतिक हित है। वे विपक्षी दलों के बहकावे में न आये, वरना यहां मोदी एवं शाह के पास अन्य विकल्प हैं जो मोदी सरकार को संकट में नहीं जाने देंगे। मोदी की राजनीतिक यात्रा को देखा जाए तो उन्होंने अनेक ऐसी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है जिनकी कल्पना नहीं की जाती थी-पहले गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में और फिर देश के प्रधानमंत्री के रूप में।

मोदी के सामने चुनौतियां पूर्ण बहुमत के दौर में भी रही है और अब भी कायम है। इस राह पर दो बड़ी चुनौतियां खड़ी हैं, जिनकी अनदेखी करते हुए आगे बढ़ना मुमकिन नहीं है। ये हैं बेरोजगारी और असमानता। इंटरनैशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन की इंडिया एम्प्लॉयमेंट रिपोर्ट के मुताबिक देश में 80 प्रतिशत बेरोजगार युवा हैं। गरीब मुक्त भारत बनाने का लक्ष्य भी सामने हैं। पूर्व के दौ कार्यकाल में मोदी ने इसमें बड़ी सफलता हासिल की है। जहां तक असमानता की बात है तो उसे अक्सर तेज विकास के आगे ज्यादा तवज्जो नहीं मिलती, लेकिन याद रखने की बात है कि तेज विकास को अगर टिकाऊ बनाना हो तो असमानता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसी मौलिक सोच एवं दृष्टि से मोदी सरकार 3.0 का अजेंडा दुनिया में भारतीय अर्थव्यवस्था को एक चमकते सितारे के रूप में स्थापित करने एवं सुदृढ़ आर्थिक विकास के लिये आगे की राह दिखाने वाला होगा। संभावना है कि मोदी की तीसरी पारी में समावेशी विकास, वंचितों को वरीयता, बुनियादी ढांचे में निवेश, क्षमता विस्तार, हरित विकास, महिलाओं एवं युवाओं की भागीदारी, मोदी की गारंटियों पर बल दिया जायेगा। इंफ्रास्ट्रक्चर, मैन्युफैक्चरिंग, डिजिटल और सामाजिक विकास की दृष्टि से देश को आत्मनिर्भर बनाने की रफ्तार को भी गति दी जायेगी। वन नेशन, वन इलेक्शन और यूनिफॉर्म सिविल कोड जैसे मुद्दों पर राजनीतिक मजबूरी की विशेष छाप देखने को मिल सकती है। लेकिन मोदी की कोशिश रहेगी कि वे अपने इन मुद्दों को भी आकार दे सके। इनमें कुछ विलम्ब हो सकता है, लेकिन ये और ऐसे अनेक मुद्दें मोदी की प्राथमिकता बने रहेंगे।

पिछले दस वर्षों का मोदी का कार्यकाल यह बताता है कि जहां उन्होंने देश विकास की एक अमिट गाथा लिखी, वहीं वे देश में सबसे सशक्त और लोकप्रिय नेता के रूप में उभरे और विश्व पटल पर अपनी एक गहरी छाप छोड़ते हुए भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा किया। इससे विश्व में भारत का मान बढ़ा और इसे उनके विरोधी भी स्वीकार करते हैं। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने न केवल साहसिक फैसले लिए, बल्कि विकास और जनकल्याण के ऐसे कार्य किए जिसने देश की तस्वीर बदली, भारत का विकास हुआ। अब वह विकसित भारत के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। चूंकि गठबंधन सरकार के बावजूद कमान प्रधानमंत्री के हाथ में है और उन्होंने यह कहा है कि वह अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस एजेंडे के प्रति सहयोगी दलों और विशेष रूप से टीडीपी और जेडीयू ने भी अपनी संकल्पबद्धता जताई है इसलिए मोदी की प्रधानमंत्री के रूप में तीसरी पारी निरंतरता, साहसिकता, दृढ़ता का परिचायक ही होगी। राजनीति की लंबी पारी ने मोदी को दृढ़ता के साथ ही लचीलेपन का भी पाठ पढ़ाया है। कोई कारण नहीं कि राजनीतिक विरोधियों को साथ लेने में दिखाया गया लचीलापन सहयोगियों को बनाए रखने में काम नहीं आएगा। दूसरी बात यह कि चाहे चंद्रबाबू नायडू हों या नीतीश कुमार, दोनों विकास की राजनीति का चेहरा रहे हैं।

मंत्रिमण्डल का गठन करते हुए ऐसा नजर नहीं आया कि भाजपा गठबंधन सहयोगियों के किसी तरह के दबाव में हो। पिछली सरकार में महत्वपूर्ण मंत्रालय संभालने वाले भाजपा के सांसद वरिष्ठता क्रम में शपथ लेते नजर आए। मंत्रिमंडल के गठन में गठबंधन के हितों के साथ ही जातीय संतुलन और महिलाओं को उचित प्रतिनिधित्व देने का प्रयास किया गया। हरियाणा में भले भी पांच सांसद इस बार चुने गए हों, लेकिन इस साल राज्य में विधानसभा चुनाव को देखते हुए पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल को कैबिनेट व राव इंद्रजीत सिंह तथा कृष्णपाल सिंह को राज्यमंत्री बनाया गया। वहीं पंजाब से कोई भाजपा सांसद नहीं चुना गया लेकिन पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह के पोते रवनीत बिट्टू को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। झारखंड में इस साल चुनाव होने हैं तो राज्य को तीन मंत्री दिये गए हैं। मोदी का मंत्रिमण्डल देश विकास के साथ राजनीतिक अपेक्षाओं के अनुरूप प्रभावी एवं सशक्त एक तीर से अनेक निशाने साधते हुए दिखा।

बीजापुर में मानसून की एंट्री..3-4 दिनों में पहुंचेगा रायपुर

बिजली गिरने से 7 मवेशियों की मौत, दुर्ग, बालोद, बेमेतरा, धमतरी में बारिश के आसार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में मानसून की एंट्री हो गई है। 8 जून को मानसून सुकमा पहुंचा था, लेकिन पिछले 4 दिनों से ये आगे नहीं बढ़ा था। मौसम विभाग के अनुसार इसकी रफ्तार कम पड़ी है लेकिन अब लगातार आगे बढ़ रहा है। अगले 3 से 4 दिनों में ये रायपुर पहुंचेगा। गरियाबंद, धमतरी, दुर्ग, बालोद, बेमेतरा, बस्तर, कोंडागांव, दंतेवाड़ा, सुकमा, कांकेर, बीजापुर और नारायणपुर जिले में आज हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है । बीजापुर जिले में उसूर ब्लॉक के आवापल्ली इलाके में गाज गिरने से पेड़ के नीचे बैठे 7 मवेशियों की मौत हो गई है। ग्रामीणों ने इसकी जानकारी प्रशासन को दी है। एक दिन पहले दंतेवाड़ा समेत आसपास के इलाकों में झमाझम बारिश हुई थी, लेकिन तापमान में कोई विशेष गिरावट नहीं आई है।

पिछले दिनों हल्की बारिश के बाद तापमान सामान्य के करीब पहुंच गया था लेकिन मंगलवार को अधिकतम तापमान फिर सामान्य से ऊपर पहुंचने के कारण दिनभर गर्मी महसूस हुई। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक अगले दो तीन दिन राहत की संभावना नहीं है। दिन के तापमान में भी एक से दो डिग्री की वृद्धि होगी। रायपुर में मंगलवार को दिन का तापमान 42.6 डिग्री तक पहुंच गया। यह सामान्य से 3.6 डिग्री अधिक है। आउटर में कहीं-कहीं हल्की बारिश हुई। शाम को हवा में नमी 43 फीसदी के आसपास रिकॉर्ड की गई। वहीं प्रदेश के अन्य जिलों में तेज धूप के कारण गर्मी और नमी की वजह से हल्की उमस महसूस हुई।

आकाशीय बिजली गिरने से मौत: कवर्धा में मंगलवार को आकाशीय बिजली गिरने से एक युवक की मौत हो गई, जबकि 6 लोग घायल हैं। मौसम विभाग के मुताबिक अगले 5 दिनों में बस्तर संभाग के जिलों में गरज-चमक के साथ वज्रपात और अंधड़ की गतिविधियां जारी रहने की संभावना है।

ऐसा रहा तापमान: मंगलवार को प्रदेश में सबसे अधिक तापमान डोंगरगढ़ में 43.6 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। वहीं सबसे कम तापमान 22.2 नारायणपुर में रिकॉर्ड किया गया। मानसून की देरी से आने के कारण कई जिलों थी, लेकिन फिर भी तापमान में कोई खास गिरावट नहीं आई। बस्तर संभाग में 38.7 डिग्री के साथ दंतेवाड़ा सबसे ज्यादा गर्म है। इसके अलावा बस्तर में 37.6 डिग्री, बीजापुर में 37.4 डिग्री , और नारायणपुर में सबसे कम 33 डिग्री तापमान दर्ज किया गया है। मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो आज कुछ इलाकों में बारिश की संभावना है।

सरगुजा में झुलसा देने वाली गर्मी: अंबिकापुर संभाग मुख्यालय सहित पूरे संभाग में लगातार एक सप्ताह से भीषण गर्मी पड़ रही है। इस दौरान लगातार अधिकतम तापमान का पारा लगातार 41 डिग्री के ऊपर है। मंगलवार को अंबिकापुर का अधिकतम तापमान 41.7 डिग्री रिकार्ड किया गया है। इस दौरान न्यूनतम तापमान में कुछ गिरावट आई है। मौसम विभाग के पूर्वानुमानों के अनुसार सरगुजा में मानसून 15 जून तक पहुंचने की संभावना थी। सुकमा के पास मानसून के थम जाने से इसमें देरी की संभावना है। हालांकि सरगुजा संभाग में बुधवार से बादल छाने लगे हैं।

बस्तर संभाग में दंतेवाड़ा सबसे गर्म: एक दिन पहले दंतेवाड़ा समेत आस-पास के इलाकों में तेज झमाझम बारिश हुई में दिन का तापमान बढ़ गया है। रायपुर में पारा 42.6 डिग्री रहा। वहीं रात का पारा 29.7 डिग्री दर्ज किया गया। दिन का पारा औसत से 3.6 डिग्री अधिक रहा।

वहीं बिलासपुर का पारा 41.8 डिग्री रहा, अंबिकापुर में तापमान 41.7 डिग्री दर्ज किया गया जो सामान्य से 4.5 डिग्री अधिक रहा। वहीं जगदलपुर में पारा 37.6 डिग्री रहा। प्रदेश के अन्य जिलों में भी पारा 39 से 42 डिग्री के बीच रहा।

स्वास्थ्य मंत्री ने ली जिला अधिकरियों की समीक्षा बैठक

लोगों के छोटे-छोटे कार्यों को प्राथमिकता से करें : श्याम बिहारी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा एवं बीस सूत्रीय कार्यान्वयन मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने आज कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में जिले के जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ संयुक्त समीक्षा बैठक कर शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की जानकारी लेकर चर्चा की। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष रेणुका सिंह, जिला कलेक्टर डी. राहुल वेंकट, अपर कलेक्टर अनिल सिदार, एसडीएम लिंगराज सिदार, सर्व जनपद सीईओ, तहसीलदार, सीएमओ सहित प्रशासनिक अमले के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

स्वास्थ्य मंत्री ने बैठक में कहा कि जिला कलेक्टर प्रत्येक साप्ताहिक समय सीमा की बैठक में विभागीय योजनाओं की नियमित समीक्षा करें। राजस्व अधिकारी नामांतरण सीमांकन के प्रकरणों की समीक्षा कर बरसात के पहले निराकरण की कार्यवाही करें। लंबित प्रकरणों के निराकरण में तेजी लाएं, जिससे आमजन को लाभ हो। आमाखेरवा में जो भी कार्यालय बनने वाले हैं उनका जिला अधिकारी संयुक्त सर्वे कर जल्द से जल्द प्रस्ताव भेजे। उन्होंने विभिन्न विभागों को अनुपूरक बजट में कार्य जोड़ने के लिए प्रस्ताव जल्द से जल्द प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। उन्होंने राजस्व अमला से कहा कि जिले में जहां भी सामुदायिक उपयोग के जमीन पर अतिक्रमण हो रहा है। उसको पहले सख्ती से रोके। उन्होंने जिले में जितने भी वन अधिकार पत्र के पट्टे बटने है। उनका निराकरण यथाशीघ्र करने के निर्देश दिये। उन्होंने चिरमिरी नगर निगम आयुक्त को पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने नगर पंचायत लेदरी, खोंगापानी, मनेंद्रगढ़ तथा झगराखाड़ में पानी एवं बरसात से पहले छोटे मोटे नालों की साफ-सफाई करने के लिए पीएचई, नगर निगम, स्वास्थ्य विभाग तथा एसईसीएल के अधिकारियों की संयुक्त बैठक कर कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने सहकारिता एवं कृषि विभाग को संयुक्त रूप जिले में खाद एवं बीज की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने किसानों कम मात्रा में पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में मिलेट बीज उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। मिलेट्स के तहत कोदो- कुटकी, रागी, ज्वार, दलहन, तिलहन आदि फसलों के रकबा को बढ़ाने के निर्देश दिए तथा किसानों को प्रोत्साहित करने को कहा। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि किसानों को समय पर मानक बीज, खाद, कीटनाशक दवाई आदि वितरण सुनिश्चित हो। उन्होंने जल संसाधन विभाग को साजाखाड़, सलका, अंजनी जलाशय, सिंघत, बरदर जलाशय के नहर लाइन को ठीक करने के निर्देश दिये। उन्होंने जिले में आय, जाति, निवास, आधार, आयुष्मान कार्ड के लिए प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में माह में एक-एक शिविर आयोजित करने के निर्देश दिये।

उन्होंने कहा हम लोक सेवक है, आते जाते रहते है। किंतु आप सभी अधिकारी स्थाई होते है। इसलिए दीर्घकालीन रूप से आप जो भी कार्य करें उसे अच्छे से करें। लोगों के छोटे-छोटे कार्यों को प्राथमिकता से करें। सक्षम व्यक्ति का काम तो हो जाता है लेकिन जो लोग असक्षम है। उनका काम नहीं हो पाता है। जिलाधिकारी ऐसे लोगों के लिए प्रत्येक ब्लॉक में कैम्प लगाकर उनके कार्यों को कराना सुनिश्चित करें। इसी तरह उन्होंने लोक निर्माण विभाग, खनिज, श्रम, उद्योग, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, पंचायत सहित विभिन्न शासकीय विभागों को भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

युवा नेता शिवांश जैन ने चिरमिरी स्केल मुख्य महाप्रबंधक को सोपा ज्ञापन

मीडिया ऑडीटर, चिरमिरी निप्र। छत्तीसगढ़ प्रदेश युवक कांग्रेस के प्रवक्ता एवं नगर निगम चिरमिरी के पार्षद शिवांश जैन ने चिरमिरी स्केल मुख्य महा प्रबंधक से मिलकर तीन महत्वपूर्ण मांग को पूर्ण करने हेतु ज्ञापन सोपा, जिसमें प्रमुख रूप से डोमन हिल में नगर निगम द्वारा 3 करोड़ की लागत से बन रहे सर्व सुविधायुक्त मंगल भवन पर मबस द्वारा लगा स्टे हटाने की मांग की गई, इसके साथ वर्तमान में मबस द्वारा चिरमिरी के विभिन्न क्षेत्रों में मबस के मकान में रह रही जनता और रिटायर्ड कर्मचारियों को मकान खाली करने का नोटिस देने का भी विरोध उनके द्वारा किया गया, एवं इसे तत्काल रोकने को कहा गया एवं तीसरे बिंदु में अंजनहिल और बरतूँगा हिल में खुलने वाली निजी खदानों में क्षेत्र के युवा बेरोजगारों को अधिक से अधिक रोजगार देने हेतु मांग की गई, उपरोक्त मांग पूर्ण न होने पर आगामी समय में उनके द्वारा धरना प्रदर्शन एवं आंदोलन भी किया जाएगा, गौर तलभ है की पार्षद शिवांश जैन काफी समय से इस प्रकार के जनहित के विभिन्न मुद्दे उठाते रहते हैं, जो क्षेत्र के प्रति उनके विकास की सोच को दर्शाता है, इस दौरान उनके साथ पार्षद सुनील मुकेश इकराम नितिन सिंह वीरू खान अशरफ अली राहुल मलिक पूर्व एल्डरमैन उमाशंकर अलगमकर मोहम्मद शहाबुद्दीन दिनेश वस्त्रकार एवं अन्य कांग्रेस जन उपस्थित रहे।

बॉयफ्रेंड संग मिलकर पति को मार डाला

पत्नी ने अवैध संबंध छिपाने रची साजिश, शराब में मिला दी सल्फास की गोलियां

मीडिया ऑडीटर, मुंगेली एजेंसी। छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले में पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति की हत्या करवा दी। दोनों के अवैध संबंध की भनक पति को लग गई थी, इसलिए रास्ते से हटाने के लिए हत्या की साजिश रची। पुलिस ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। घटना सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र की है। दरअसल, 7 जून को रेहुंटा स्थित शराब दुकान के पीछे नरेंद्र श्रीवास (25) की लाश मिली थी। उसके शरीर पर चोट के निशान थे, जिससे हत्या की आशंका जताई गई। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और साइबर सेल की मदद से मामले की जांच शुरू की, जिसमें प्रेम-प्रसंग का एंगल निकला।

पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर रची साजिश: नरेंद्र की पत्नी पूजा श्रीवास का राकेश श्रीवास (29) के साथ अवैध संबंध चल रहा था। जिसकी जानकारी नरेंद्र को लग गई थी। जिस कारण इनके बीच विवाद होता था। इसलिए उसे रास्ते से हटाने और प्यार को पाने के लिए हत्या की साजिश रची गई।

शराब में सल्फास की गोलियां मिलाकर पिलाई: प्लानिंग के जरिए उसे मुख्य आरोपी राकेश श्रीवास ने शराब पीने के लिए बुलाया,क्योंकि उसे शराब पीने की आदत थी। पहले दोस्तों के साथ मिलकर जमकर शराब पिलाई और उसके पैग में सल्फास की गोलियां मिला दी। उतने में भी मन नहीं भरा तो पीटा और तौलिए से मुंह दबाकर हत्या कर दी।

पत्नी की कॉल डिटेल से खुला राज: पुलिस ने जांच के दौरान पत्नी की कॉल डिटेल निकाला, तो पता चला कि राकेश श्रीवास के साथ वो लगातार बातें करती थी। तब पुलिस को अहम सुराग मिला। पूछताछ में पहले गोलमोल जवाब देने लगे, लेकिन जब सख्ती बरती गई तो जुर्म कबूल कर लिया। हत्या करने के बाद शव को शराब दुकान के पीछे फेंक दिया था।

पत्नी और प्रेमी समेत 6 गिरफ्तार: एसपी गिरिजा शंकर जायसवाल का कहना है कि, इस मामले में पत्नी पूजा श्रीवास, मुख्य आरोपी राकेश श्रीवास, शिवम साहू (19), विनोद श्रीवास (44), सत्यनारायण श्रीवास (31) और विनोबा भावे को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी ने दो लोगों को बिलासपुर से हायर किया था। सभी को न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया है।

बस्तर में बुआ-भतीजी की तालाब में डूबने से मौत

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में तालाब में डूबने से बुआ और भतीजी की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि ये दोनों नहाने के लिए गांव के ही तालाब गईं थीं। गहरे पानी में चली गईं जिससे दोनों डूब गईं। उनकी मौत हो गई। गोताखोरों ने शव निकाल लिया गया है। मामला भानपुरी थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, नम्रता ठाकुर (18) अपनी भतीजी प्रियंका ठाकुर (16) के साथ भानपुरी के ही तालाब में नहाने गई हुई थी। नहाने के दौरान प्रियंका गहरे पानी में चले गई, जिससे वह डूब रही थी। वहीं, उसकी बुआ भी उसे बचाने की कोशिश की और वह भी गहरे पानी में चली गई।

परिजन मौके पर पहुंचे: जिससे एक के बाद एक दोनों डूब गईं। कुछ देर बार जब वे घर नहीं लौटीं तो परिजन उन्हें ढूंढने के लिए पहुंचे। तालाब के किनारे उनके कपड़े समेत अन्य सामान रखे हुए थे। उन्हें अंदेशा हुआ कि वे पानी में डूब गई हैं। जिसके बाद इसकी जानकारी पुलिस को दी गई। कुछ देर बाद गोताखोरों की टीम भी मौके पर पहुंचीं।

दोनों की बॉडी निकाल ली गई: गोताखोरों ने करीब एक से डेढ़ घंटे तक तालाब में रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया। फिर एक-एक कर पानी से दोनों की बॉडी निकाल ली गई। जिसके बाद पुलिस ने मर्ग कायम कर शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए अस्पताल भिजवाया। रिपोर्ट के बाद दोनों के शवों को परिजनों को सौंप दिया गया है। दोनों के परिवार में मातम पसरा हुआ है।

पीईटी एवं पीपीएचटी प्रवेश परीक्षा 13 जून को

परीक्षार्थियों के लिए दिशा निर्देश जारी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल, रायपुर द्वारा 13 जून 2024 दिन गुरूवार को पीईटी एवं पीपीएचटी प्रवेश परीक्षा प्रातः 9:00 बजे से 12:15 बजे तक एवं दोपहर 02:00 बजे से शाम 05:15 बजे तक कुल दो पालियों में परीक्षा केंद्र शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंद्रगढ़ जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (छ.ग.) में आयोजित किया जाना है। अतएव परीक्षार्थियों हेतु निम्नानुसार दिशा निर्देश जारी किया जाता है। परीक्षा दिवस को प्रत्येक परीक्षार्थी लगभग एक घंटे पूर्व अपने परीक्षा केंद्र में उपस्थित होंगे, जिससे उनके मूल पहचान पत्र से उसकी पहचान किया जा सके एवं परीक्षा केंद्र में जाने की अनुमति दी जा सके। परीक्षार्थी परीक्षा दिवस के एक दिवस पूर्व ही अपने केंद्र की भौगोलिक स्थिति से भली-भांति परिचित हो जाये।

परीक्षा प्रारंभ होने के पश्चात् किसी को भी परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं दिया जायेगा। परीक्षार्थियों को अपना फोटोयुक्त मूल आई.डी. प्रूफ जैसे मतदाता पहचान पत्र, ड्रायविंग लायसेंस, पेन कार्ड, आधार कार्ड, पासपोर्ट, विद्यालय का फोटोयुक्त परिचय पत्र, फोटोयुक्त अंकसूची मूलरूप में (फोटो कॉपी मान्य नहीं) परीक्षा दिवस में परीक्षा केंद्र में लाना अनिवार्य होगा। मूल पहचान पत्र के अभाव में परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

धान कारोबारी से 27 लाख की लूट

रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायपुर में बुधवार को एक व्यापारी से 27 लाख रुपए की लूट हो गई। बताया जा रहा है कि बदमाश दिन दहाड़े व्यापारी के दफ्तर में घुस आए और पिस्टल दिखाकर रुपयों से भरा बैग लेकर भाग निकले। सूचना मिलने पर पुलिस पहुंची और आसपास लगे सीसीटीवी चेक कर रही है। मामला खरौरा थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, तिल्दा निवासी व्यापारी विष्णु शर्मा किसानों और राइस मिलर्स के बीच धान की खरीदी-बिक्री करने का काम करते हैं। वह सुबह करीब 11 बजे जैसे ही अपने खरौरा स्थित दफ्तर पहुंचे थे। इसी दौरान दो बदमाश उनके ऑफिस में घुस आए और पिस्टल निकाल ली। बदमाशों ने व्यापारी को डराकर उनसे रुपयों से भरा बैग छीन लिया और वहां से भाग निकले। इसके बाद व्यापारी ने पुलिस को वारदात की सूचना दी। पुलिस आसपास के लोगों से पूछताछ कर रही है। कुछ संदिग्धों को भी हिरासत में लिया गया है।

करंट की चपेट में आने से मजदूर की मौत

मीडिया ऑडीटर, भिलाई एजेंसी। भिलाई के छावनी थाना क्षेत्र अंतर्गत वार्ड 27 शास्त्री नगर में बुधवार सुबह एक मजदूर की करंट लगने से मौत हो गई। मजदूर वार्ड 28 के पूर्व पार्षद जोहन सिन्हा के घर में सैप्टिक टैंक निर्माण में काम कर रहा था। दुर्घटना के बाद मजदूर को बीएम शाह हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया गया। छावनी पुलिस मामले की जांच कर रही है। छावनी पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक शास्त्री नगर में वार्ड 28 के पूर्व पार्षद जोहन सिन्हा के घर में सैप्टिक टैंक के गड्ढे का निर्माण चल रहा था। टैंक में पानी भरा हुआ था। वहां चंद्रमणि नाम का 35 वर्षीय श्रमिक पानी निकालने के लिए गड्ढे में उतरा। उसे यह पता नहीं था कि पानी में करंट दौड़ रहा है। अचानक वो करंट की चपेट में आ गया और तड़पने लगा। उसको देखकर वहां काम कर रहे लोगों में हड़कंप मच गया। आनन फानन में बिजली सप्लाई को रोका गया। इसके बाद चंद्रमणि को बेहोशी की हालत में बाहर निकाला गया। उसे तुरंत पास के निजी अस्पताल बीएम शाह ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मौत की खबर सुनते ही पूरे मोहल्ले में हड़कंप मच गया। मृतक के परिजन और पहचान वाले अस्पताल में ही हंगामा करने लगे। उन्होंने मुआवजे की मांग को लेकर प्रदर्शन शुरू किया। बाद में बड़ी मुश्किल से पुलिस अधिकारियों और अतिरिक्त तहसीलदार ने समझाया तब जाकर वो लोग माने।

पूर्व पार्षद ने बताई ठेकेदार की गलती: पूर्व पार्षद जोहन सिन्हा ने पुलिस को बताया कि चंद्रमणि निजी ठेकेदार राम अवतार के अधीन काम करता था। बुधवार सुबह वह काम करने के लिए आया था। सैप्टिक टैंक से पानी भरा होने के चलते पहले पानी को निकालने का काम किया जा रहा था। इसके लिए ठेकेदार ने स्वयं की मोटर लगाई थी। मोटर खराब हो जाने से उसने चंद्रमण को पानी में उतरने के लिए कहा, लेकिन करंट सप्लाई को बंद नहीं किया। इससे बिजली का करेंट पानी में फैल गया और चंद्रमणि उसकी चपेट में आ गया।

कई घंटे तक चला परिजनों का हंगामा: इधर चंद्रमणि की मौत के बाद नाराज परिजनों ने हंगामा शुरू कर दिया। यह हंगामा सुबह से लेकर देर शाम तक चला। परिजन मुआवजे की मांग पर डटे रहे। बाद में अधिकारी और भाजपा नेताओं ने बीच बचाव किया। परिजनों का कहना है कि मृतक के दो छोटे-छोटे बच्चे और पत्नी हैं। ऐसे में उनका भरण पोषण कैसे होगा। इसलिए जब तक उचित मुआवजा नहीं मिल जाता वे शव का पोस्टमार्टम नहीं कराएंगे और न ही अंतिम संस्कार करेंगे। खबर लिखे जाने तक बंद कमरे में परिजन और कुछ नेताओं के बीच समझौता चल रहा है।

बार के सामने युवक-युवतियों का हाई वोल्टेज ड्रामा

आधी रात बीयर की बोतल लेकर निकले, कमेंट्स करने पर हुआ विवाद, फिर मारपीट

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में पेट्रेशियन होटल के इल्यूम बार के सामने नशे में युवक-युवतियों के हाई वोल्टेज ड्रामेबाजी का वीडियो सामने आया है। बार से बाहर निकलते समय लड़कियों पर कमेंट्स करने को लेकर कुछ लड़कों से विवाद के बाद मारपीट हो गई।

कुछ युवक हाथ में बीयर की बोतल लेकर बवाल मचाते रहे। वहीं युवतियां भी जमकर हंगामा करने लगे। पूरा मामला सिरगिट्टी थाना क्षेत्र का है। पेट्रेशियन होटल में इल्यूम बार संचालित है। जहां देर रात तक शराब परोसी जाती है। पुलिस और आबकारी विभाग का अमला यहां कभी कोई कार्रवाई भी नहीं करते। जबकि, होटल के बाहर ही कुछ दूर में पॉइंट लगाकर पुलिस शराब पीकर गाड़ी चलाने वालों पर कार्रवाई करती है।

लड़कियों पर कमेंट पर मचा बवाल, मारपीट: बताया जा रहा है कि बार से बाहर निकलते वक्त युवक के साथ युवतियां भी नशे में थी। कुछ लड़कों ने युवतियों को देखकर कमेंट किया, जिसका उन्होंने विरोध किया। इसी बात को लेकर उनके बीच जमकर मारपीट शुरू हो गई। जिसके बाद युवक-युवतियां हंगामा करते हुए बवाल मचाने लगे। उनका किसी ने टप्क्म्व् भी बना लिया, जो वायरल हो रहा है। घटना रविवार देर रात की बताई जा रही है।

पहले भी हो चुका है विवाद: इल्यूम बार में इस तरह का पहला विवाद नहीं है। पहले भी यहां युवक-युवतियों के बीच झगड़ा हो चुका है। दरअसल, देर रात तक बार संचालित होती है, जहां युवक-युवतियां पब में डांस करते हैं। इसके चलते उनके बीच आए दिन झगड़ा होता है।

पुलिस और आबकारी विभाग नहीं करती कार्रवाई: शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर इन दिनों पुलिस अभियान चलाकर कार्रवाई करने का दावा कर रही है। शहर में जगह-जगह चेकिंग पाइंट लगाकर जांच भी की जा रही है। लेकिन, बार में देर रात तक शराब परोसने के मामले में पुलिस कभी कार्रवाई नहीं करती। न ही आबकारी विभाग के अफसर बार में जांच करने जाते हैं। पुलिस और आबकारी विभाग ने तय समय के बाद भी बार खोलने की छूट दे रखा है। यही वजह है कि देर रात तक शराब परोसने वालों पर कानूनी कार्रवाई नहीं हो रही है।

पुलिस बोली- घटना की जानकारी नहीं: इधर, सिरगिट्टी टीआई भारती मरकाम से जानकारी लेने के लिए उनके मोबाइल पर संपर्क किया गया। लेकिन, उन्होंने फोन ही रिसीव नहीं की। वहीं, पुलिस अफसरों ने कहा कि युवक-युवतियों के विवाद की कोई शिकायत नहीं मिली है। न ही उन्हें मारपीट की जानकारी है। उन्होंने वायरल वीडियो की भी जानकारी होने से इनकार किया है। साथ ही कहा कि शिकायत मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

इटली में खालिस्तानियों ने महात्मा गांधी की प्रतिमा तोड़ी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इटली दौरे से ठीक पहले खालिस्तान समर्थकों ने वहां पर महात्मा गांधी की मूर्ति को तोड़ दिया। उन्होंने मूर्ति के नीचे मृतक हरदीप सिंह निज्जर का नाम भी लिख दिया। अधिकारियों ने कहा कि मामले की जानकारी मिलने के बाद उन्होंने मूर्ति पर लिखे नाम को हटा दिया है और सफाई कर दी है। इस घटना को लेकर विदेश मंत्रालय की भी टिप्पणी आई है। विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा ने कहा कि इस मामले के लेकर इटली सरकार के अधिकारियों से शिकायत की गई है। उचित कार्रवाई की जा रही है।

हरियाणा की कपड़ा फैक्ट्री में आग

पानीपत। हरियाणा के पानीपत में बुधवार दोपहर सेक्टर 29 स्थित आदर्श कपड़े की फैक्ट्री में आग लग गई। घटना के वक्त फैक्ट्री के अंदर 20 से 25 कर्मचारी काम कर रहे थे। आग के भयंकर रूप लेने से पहले ये सभी बाहर निकल आए थे। जिससे जानी नुकसान होने से बच गया। इसके बाद सूचना फायर ब्रिगेड को दी गई। फायर ब्रिगेड की गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने में जुट गईं। पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंची और वहां जमा भीड़ को खदेड़ा। फिलहाल आग को कंट्रोल कर लिया गया है।

इससे पहले आग लगने के बाद आसपास के इलाके को सील कर दिया गया। वहीं लोगों ने बताया कि आग लगने की सूचना तुरंत फायर ब्रिगेड को दे थी, लेकिन फायर ब्रिगेड की गाड़ियां लेट पहुंचीं। गाड़ियों के पहुंचने से पहले आग ने भयंकर रूप ले लिया था। दमकल विभाग के अधिकारी ने कहा कि 15 गाड़ियां मौके पर पहुंची। करनाल और सोनीपत जिला में भी मैसेज भेजा गया। दूसरी मंजिल में रखा सारा सामान जल गया है। पानीपत के लीडिंग फायरमैन अमित कुमार ने कहा कि फैक्ट्री की दूसरी बिल्डिंग में भयंकर आग लगी है। सारा सामान जल गया है। यहां कपड़ा और धागा था। फायर ब्रिगेड की 15 गाड़ियां मौके पर मौजूद हैं। करनाल और सोनीपत में भी फायर ब्रिगेड को मैसेज भेज दिया गया है। कितना नुकसान हुआ है, इसका पता आग बुझने के बाद ही लगेगा।

सीएम मोहन यादव ने दिया छह माह के कार्यकाल का ब्योरा, बोले- कांग्रेस ने किया दुष्प्रचार लेकिन एक भी योजना बंद नहीं हुई

भोपाल। मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने अपने छह माह के कार्यकाल का ब्योरा देते हुए कहा कि एफ़ प्रदेश में गड़बड़ी किसी भी तरह की स्वीकार नहीं की जाएगी। जहां कहीं नियमों के विपरीत काम होगा, वहां कड़ी कार्रवाई होगी। अवैध खनन हो या फिर कानूनी व्यवस्था से जुड़े हुए मामले त्वरित कार्रवाई की जाएगी और हम ऐसा कर भी रहे हैं। रोजगार सरकार की प्राथमिकता में है। मंत्रालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में सीएम ने कहा कि उज्जैन जैसी रीजनल इन्वेस्टर्स समिट जबलपुर, ग्वालियर, रीवा समेत अन्य जगह होंगी। कांग्रेस ने योजनाएं बंद करने को लेकर काफी दुष्प्रचार किया लेकिन एक भी योजना बंद नहीं हुई। मंत्री 15 अगस्त को

अपने प्रभार के जिले में झंडा फहराएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार के गठन को छह माह हो चुके हैं। तीन माह लोकसभा चुनाव की आचार संहिता में बीते। शांतिपूर्ण चुनाव करना चुनौती थी। विपक्षी दल सहित सबने मिलकर शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न कराए हैं। लोकसभा चुनाव में जो परिणाम आए हैं उसके अनुरूप ही प्रदेश से छह मंत्री बनाए गए हैं।

केन-बेतवा लिंक परियोजना के लिए दो टेंडर हो चुके हैं। वन भूमि से जुड़ा हुआ जो विषय था, उसका भी समाधान कर लिया गया है। चंबल-पार्वती-काली सिंध परियोजना को लेकर 20 वर्ष से उलझे विषय का भी समाधान कर लिया है।

गांधी सागर जलाशय के जल उपयोग को

ओडिशा में भाजपा की पहली सरकार,15वें सीएम बने मोहन माझी

भुवनेश्वर। ओडिशा में पहली बार भाजपा की सरकार बन गई है। 52 साल के मोहन चरण माझी ने बुधवार को राज्य के 15वें मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। उनके साथ दो डिप्टी सीएम कनक वर्धन सिंहदेव (67) और प्रभाती परिदा (57) ने भी शपथ ली। माझी मंत्रिमंडल में 13 मंत्रियों ने भी शपथ ली। इनमें सुरेश पुजारी, रबिनारायण नाइक, नित्यानंद गोंड, कृष्ण चंद्र पात्रा, पृथ्वीराज हरिचंदन, मुकेश महालिंग, बिभूति भूषण जेना, कृष्ण चंद्र महापात्रा, गणेश राम सिंह खुंटिया, सूर्यवंशी सूरज, प्रदीप बालसामंता, गोकुला नंद मल्लिक और संपद कुमार स्वैन शामिल हैं। शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, जेपी नड्डा, अमित शाह के अलावा उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, असम, हरियाणा, गोवा और उत्तराखंड के सीएम भी मौजूद थे। ओडिशा विधानसभा चुनाव में भाजपा ने पहली बार बहुमत के साथ जीत हासिल की है। राज्य की 147 सीटों में से भाजपा को 78 सीटें मिली हैं। वहीं, नवीन पटनायक की बीजू जनता दल को 51, कांग्रेस को 14, सीपीआई को 1 और अन्य को 3 सीटों पर जीत मिली है। लोकसभा

चुनाव में भी पहली बार भाजपा ने यहां बड़ी जीत दर्ज की है। राज्य की 21 सीटों में से भाजपा को 20 और कांग्रेस को एक सीट मिली है। बीजेडी और अन्य दलों को एक भी सीट नहीं मिली। 2019 में भाजपा को 8, बीजेडी को 12 और कांग्रेस को एक सीट पर जीत मिली थी। यानी भाजपा को इस बार 12 सीटों का फायदा है। ओडिशा को 24 साल बाद आदिवासी सीएम मिला। इससे पहले कांग्रेस के हेमानंद बिस्वाल राज्य के पहले आदिवासी सीएम थे।

लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी अगले सेना प्रमुख

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने मंगलवार 11 जून की रात लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी को नया आर्मी चीफ अपॉइंट किया है। वे मौजूदा सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे की जगह लेंगे। लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी 30 जून को पदभार संभालेंगे। इसी दिन मौजूदा सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे रिटायर हो रहे हैं। लेफ्टिनेंट जनरल द्विवेदी 30वें सेना प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालेंगे। इससे पहले वे सेना के वाइस चीफ, नॉर्दर्न आर्मी कमांडर, डीजी इन्फेंट्री और सेना में कई अन्य कमांड के प्रमुख के रूप में देश की सेवा कर चुके हैं। लेफ्टिनेंट जनरल द्विवेदी वर्तमान में वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ के पद पर कार्यरत हैं। उनकी नियुक्ति में सरकार ने सीनियॉरिटी के सिद्धांत का पालन किया है। लेफ्टिनेंट जनरल द्विवेदी के बाद सबसे सीनियर अफसर दक्षिणी सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल अजय कुमार सिंह हैं। लेफ्टिनेंट जनरल द्विवेदी और लेफ्टिनेंट जनरल अजय कुमार सिंह दोनों को 30 जून को रिटायर होना था। तीनों सेनाओं के प्रमुख 62 साल की उम्र तक या तीन साल, इनमें से जो भी पहले हो, तब तक सेवा दे सकते हैं। हालांकि, लेफ्टिनेंट जनरल रैंक के अधिकारियों की रिटायरमेंट एज 60 साल है, जब तक कि अधिकारी को फोर स्टार रैंक के लिए अप्रूव नहीं किया जाता है।

चंद्रबाबू नायडू चौथी बार आंध्र प्रदेश के सीएम बने

अमरावती। आंध्र प्रदेश में भी एनडीए की सरकार बन गई है। तेलगु देशम पार्टी सुप्रीमो चंद्रबाबू नायडू ने बुधवार को राज्य के 24वें मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। चंद्रबाबू ने राज्य की चौथी बार कमान संभाली। इसके साथ ही उन्होंने आंध्र में सबसे ज्यादा बार मुख्यमंत्री बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। नायडू के अलावा जनसेना प्रमुख और एक्टर पवन कल्याण ने डिप्टी सीएम पद की शपथ ली। उन्होंने शपथ लेने के बाद नायडू के पैर छुए। तीसरे नंबर पर नायडू के बेटे नारा लोकेश ने शपथ ली। नई सरकार में सीएम और

डिप्टी सीएम समेत 25 सदस्य होंगे। इसमें एनडीए के 20, जनसेना के 3 और भाजपा के एक मंत्री शामिल हैं। एक पद खाली रखा गया है। राज्यपाल अब्दुल नजीर ने विजयवाड़ा में केसरपल्ली आईटी पार्क में सीएम और मंत्रियों को शपथ दिलाई। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमित शाह समेत टीडीपी के मंत्री और अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री भी शामिल हुए। शपथ के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने नायडू को गले लगाकर बधाई दी। नायडू के कैबिनेट में उनके बेटे और टीडीपी महासचिव नारा लोकेश, प्रदेश अध्यक्ष के. अत्चन्नायडू और जनसेना पार्टी की राजनीतिक मामलों की समिति के अध्यक्ष नादेंडला मनोहर शामिल हैं। टीडीपी के मंत्रियों में 17 नए चेहरे हैं। बाकी 3 पहले भी मंत्री रह चुके हैं। जनसेना पार्टी के तीन मंत्री पवन कल्याण, नादेंडला मनोहर और कंडुला दुर्गेश हैं।

अखिलेश यादव ने विधायकी से दिया इस्तीफा

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने यूपी की करहल विधानसभा सीट और नेता प्रतिपक्ष के पद से इस्तीफा दे दिया है। 1 दिन पहले उन्होंने इसका ऐलान किया था। अखिलेश के साथ अयोध्या सांसद अवधेश प्रसाद ने भी विधायकी से इस्तीफा दे दिया। अवधेश प्रसाद ने कहा- हमने और राष्ट्रीय अध्यक्ष ने विधानसभा अध्यक्ष को इस्तीफा भेज दिया है। जैसे हम विधानसभा में साथ बैठते थे, वैसे ही लोकसभा में बैठेंगे। अंबेडकर नगर से समाजवादी पार्टी के नव निर्वाचित लोकसभा सांसद लालजी वर्मा ने भी इस्तीफा दे दिया है।

राहुल बोले- वायनाड छोड़ूं या रायबरेली, धर्मसंकट है

तिरुवनंतपुरम। राहुल गांधी ने कहा कि चुनाव से पहले भाजपा के नेता संविधान फाड़ने की बात कर रहे थे, लेकिन चुनाव के बाद मोदी संविधान को सिर से लगाते नजर आए। कांग्रेस नेता राहुल गांधी बुधवार 12 जून को केरल के दौरे पर हैं। लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद राहुल का यह पहला केरल दौरा है। मलप्पुरम में जनसभा के दौरान राहुल ने कहा- वायनाड सीट छोड़ूं या रायबरेली, यह मेरे लिए धर्मसकंट है। मोदी की तरह मुझे भगवान से गाइडेंस नहीं मिल रहा है। मैं साधारण मनुष्य हूं। वायनाड

या रायबरेली का फैसला मुझे खुद ही करना होगा। मेरे लिए देश की गरीब जनता ही मेरी भगवान है। मैं जनता से बात करूंगा और फैसला लूंगा। राहुल ने कहा कि केरल और उत्तर प्रदेश के लोगों ने पीएम मोदी को बताया है कि संविधान हमारी आवाज है और वे इसको छू नहीं सकते हैं। देश की जनता ने पीएम को बताया कि वे तानाशाही नहीं कर सकते हैं। चुनाव से पहले भाजपा के नेता कहते थे कि वो संविधान को फाड़ देंगे। अब चुनाव के बाद मोदी संविधान को सिर से लगाते हैं। मोदी वाराणसी में मुश्किल से जीत पाए हैं। भाजपा अयोध्या में भी हार गई है। नफरत को मुहब्बत ने हरा दिया है। मोदी ने कहा था कि वो बायोलॉजिकल नहीं हैं। उन्हें परमात्मा ने भेजा है।

स्कूलों और अस्पतालों के बाद अब दिल्ली के संग्रहालय को बम से उड़ाने की धमकी, मचा हड़कंप

नई दिल्ली। दिल्ली के चाणक्यपुरी इलाके में स्थित रेल संग्रहालय को बम की धमकी वाला एक ई-मेल मिला है। पुलिस अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि गहन जांच के बाद कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि मंगलवार को रेल संग्रहालय के आधिकारिक ईमेल पते पर एक धमकी भरा ईमेल मिला, जिसमें कहा गया था कि परिसर में बम रखा गया है। उन्होंने बताया कि जब संग्रहालय के अधिकारियों ने बुधवार को ईमेल देखा तो उन्होंने लगभग 11 बजे स्थानीय पुलिस को सूचित किया। बम का पता लगाने वाली टीम, बम निरोधक दस्ते, अग्निशमन अधिकारियों और स्थानीय पुलिस ने गहन तलाशी ली। इसके बाद उन्होंने इसे अफवाह घोषित कर दिया। सूत्रों ने बताया कि ईमेल भेजने वाले ने इसे कुछ और संग्रहालयों को भी भेजा था।

दिल्ली जल संकट- सुप्रीम कोर्ट की आप सरकार को फटकार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में बुधवार (12 जून) को दिल्ली जल संकट को लेकर सुनवाई हुई। कोर्ट ने दिल्ली की आप सरकार को पानी की बर्बादी और टैंकर माफिया को न रोकने को लेकर फटकार लगाई। कोर्ट ने दिल्ली सरकार से कहा कि जल संकट गहराते जा रहा है। आपने अब तक टैंकर माफिया को लेकर क्या एक्शन लिया है। अगर आप एक्शन नहीं ले सकते तो हम दिल्ली पुलिस से कहेंगे कि वो कार्रवाई करे। जस्टिस पीके मिश्रा और पीबी वराले की

बेंच ने दिल्ली सरकार से पूछा कि पानी की बर्बादी रोकने के लिए आपने क्या कदम उठाए हैं। इसका जवाब आज या कल में दीजिए। मामले की सुनवाई 13 जून को होगी। दरअसल, दिल्ली सरकार ने जल सकंट पर 31 मई को सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने लाल किला हमला मामले में आतंकवादी मोहम्मद आरिफ की दया याचिका की खारिज

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 24 साल पहले दिल्ली के लाल किले पर हमले की साजिश रचने के दोषी पाकिस्तानी आतंकवादी मोहम्मद आरिफ उर्फ अशफाक की दया याचिका खारिज कर दी है। नवंबर 2022 में सुप्रीम कोर्ट ने याचिका खारिज कर दी थी और उसे मौत की खबर सुनाई गई थी। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारियों ने राष्ट्रपति सचिवालय के 29 मई के आदेश का हवाला देते हुए बताया कि 15 मई को उनको आरिफ की दया याचिका मिली थी। इसे 27 मई को खारिज कर दिया गया। जानकारी के लिए बता दें कि 22 दिसंबर 2000 को लाल किले पर हमला हुआ था। इस दौरान किले के अंदर तैनात 7 राजपूताना राइफल्स यूनिट के तीन सैन्यकर्मी मारे गए थे। हमले के 4 दिन बाद मोहम्मद आरिफ को गिरफ्तार कर लिया गया। आरिफ एक पाकिस्तानी नागरिक है और आतंकवादी समूह लश्कर-ए-तैयबा का मेंबर है।

चंद्रबाबू नायडू के शपथ ग्रहण के दौरान पूर्व राज्यपाल पर भड़के अमित शाह, सरेआम लगाई फटकार

नई दिल्ली। तेलगू देशम पार्टी के मुखिया चंद्रबाबू नायडू ने आज आंध्र प्रदेश के नए मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ले ली। इसी बीच मंच पर एक ऐसी घटना घटी जिसकी अब हर तरफ चर्चाएं हो रही हैं। एन चंद्रबाबू नायडू के शपथ ग्रहण समारोह में गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा नेता और तेलंगाना की पूर्व राज्यपाल तमिलसाई सुंदरराजन पर किसी बात को लेकर भड़क गए और उन्हें चेतावनी देते हुए नजर आए। फटकार लगाने वाला यह वीडियो क्लिप सोशल मीडिया पर विवाद और अटकलों को जन्म दे रहा है। कैमरे में कैद हुई इस संक्षिप्त बातचीत में तमिलसाई अमित शाह का अभिवादन करती हुई दिखाई देती है, लेकिन अमित शाह उसे वापस बुलाते हैं और उन्हें कुछ कहते हैं। जबकि पूर्व उपराष्ट्रपति यह सब देखते रहते हैं। सौंदरराजन ने सिर हिलाकर सहमति दिखाई, लेकिन इसके बाद अमित शाह का आवभाव बदल गया। वीडियो देखने पर कयास लगाए जा रहे हैं कि उन्होंने तमिलिसाई को चेतावनी दी है।

कुछ लोगों ने इस घटना को तमिलनाडु भाजपा के भीतर चल रही अंदरूनी कलह से जोड़ा है, खासकर राज्य अध्यक्ष के अन्नामलाई और तमिलसाई सुंदरराजन के समर्थकों के बीच। इस विवाद ने तमिलनाडु की सत्तारूढ़ पार्टी

डीएमके का ध्यान खींचा है। डीएमके प्रवक्ता सरवनन अन्नादुरई ने एक्स से कहा, यह किस तरह की राजनीति है? क्या तमिलनाडु की एक प्रमुख महिला राजनेता को सार्वजनिक रूप से फटकारना शिष्टाचार है? अमित शाह को पता होना चाहिए कि हर कोई इसे देखेगा। यह बहुत गलत उदाहरण है! ऐसा लगता है कि मूल मुद्दा तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष के अन्नामलाई और तमिलसाई सुंदरराजन के बीच लोकसभा चुनावों में पार्टी की हार के बाद पैदा हुई दरार है। विवाद तब शुरू हुआ जब भाजपा राज्य में लोकसभा चुनावों में एक भी सीट नहीं जीत पाई, पार्टी पदाधिकारियों ने कथित तौर पर हार के लिए अन्नामलाई को जिम्मेदार ठहराया।

ट्रक झोपड़ी पर पलटा, परिवार के 8 लोगों की मौत

हरदोई। हरदोई में बालू से भरा ट्रक झोपड़ी पर पलट गया। घर के बाहर सो रहे एक ही परिवार के 8 लोगों की मौके पर मौत हो गई। अब परिवार में सिर्फ एक बच्ची बची है। मरने वालों में पति-पत्नी, 4 बच्चे, दामाद और नातिन शामिल हैं। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। हादसा शहर से 50 किलोमीटर दूर कानपुर हाईवे पर बुधवार रात 1.30 बजे मल्लावां चुंगी के पास हुआ। मरने वालों की पहचान अवधेश (45), उनकी पत्नी सुधा (42), 3 बच्चे- सुनैना (11), लल्ला (5), बुद्ध (4), और दामाद करन (25), उनकी पत्नी हीरो (22) और बेटी कोमल (5) के रूप में हुई। मल्लावां कस्बे में कानपुर-हरदोई मार्ग पर लोग सड़क किनारे झोपड़ी बनाकर रहते हैं।

महाराष्ट्र में बारिश से भूस्खलन, 2 की मौत

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने देश के 12 राज्यों के लिए आज तेज बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें पश्चिम बंगाल, सिक्किम, असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, केरल, कर्नाटक और तेलंगाना शामिल हैं। मानसून के कारण गोवा-महाराष्ट्र में बीते 24 घंटे में तेज बारिश हुई है। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में कल्याण-अहमदनगर राजमार्ग के मालशेज घाट पर भारी बारिश के कारण भूस्खलन हुआ। इससे पहाड़ी से एक बड़ा पत्थर ऑटो रिक्शा पर गिर गया। हादसे में चाचा-भतीजे की मौत हो गई। मरने वालों के नाम राहुल बबन भालेराव (30) और स्वयं सचिन भालेराव (7) हैं। गुजरात में भी अनुमानित समय से 4 दिन पहले ही मानसून पहुंच गया है। राज्य के हर जिले में आज बारिश हो सकती है। इसके अलावा मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड और ओडिशा में भी हल्की बारिश की संभावना है। उधर, उत्तर भारत के कई राज्यों में तेज गर्मी पड़ रही है। मौसम विभाग ने उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड के लिए सीवियर हीटवेव का अलर्ट जारी किया है। वहीं, उत्तराखंड, पंजाब,

हरियाणा, दिल्ली, ओडिशा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, मध्य प्रदेश और राजस्थान में भी लू की चेतावनी जारी की गई है। मंगलवार 11 जून को इन राज्यों में कई शहरों का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर दर्ज किया गया था। उत्तर प्रदेश का प्रयागराज लगातार दूसरे दिन देश में सबसे गर्म रहा। यहां तापमान 47 के पार रिकॉर्ड किया गया। 10 जून को यहां 46.3 डिग्री तापमान था। बिहार और झारखंड में गर्मी के कारण स्कूलों की 15 जून तक छुट्टी कर दी गई है।

संक्षिप्त समाचार

एमएमए मे किस्मत आज़माने उतरेंगे संग्राम सिंह

मुंबई (एजेंसी)। महिला पहलवान पूजा तोमर के बाद अब भारत के पुरुष पहलवान संग्राम सिंह भी मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स (एमएमए) में किस्मत आजमाएंगे। संग्राम सिंह एमएमए में उतरने वाले पहले भारतीय पुरुष पहलवान होंगे। वह राष्ट्रमंडल खेलों के विजेता रहे हैं। संग्राम ने कहा, 'कुश्ती ने मुझे बहुत कुछ दिया है जिसमें मेरे देश के लोगों का प्यार भी शामिल है और मुझे पूरा भरोसा है कि आगे भी मुझे उनका समर्थन मिलता रहेगा। उन्होंने कहा, 'एमएमए खेल का भविष्य है और पिछले कुछ वर्षों में इसकी बढ़ती लोकप्रियता से यह बात फिर साबित हुई है। भारत में इसको देखने वाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और मुझे उम्मीद है कि इस खेल के प्रशंसक मेरा समर्थन करेंगे। संग्राम के अनुसार उनका लक्ष्य एमएमए में बेहतर प्रदर्शन कर देश का मान बढ़ाना रहेगा।

गुरप्रीत बने भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टार खिलाड़ी सुनील छेत्री के संन्यास के बाद अब गोलकीपर गुरप्रीत सिंह संधू भारतीय फुटबॉल टीम की कप्तानी करेंगे। गुरप्रीत कतर के खिलाफ 2026 फीफा विश्व कप क्वॉलिफाइंग मैच के साथ ही कप्तानी शुरु करेंगे। अब टीम की कमान गुरप्रीत सिंह संधू कौ सौंपी गई है जो भारतीय टीम के गोलकीपर भी हैं। भारतीय टीम का लक्ष्य इस क्वालीफाइंग मैच में जीत दर्ज कर विश्व कप क्वालीफायर के तीसरे चरण में जगह बनाना रहेगा। सुनील छेत्री के संन्यास के बाद ये गुरप्रीत का पहला मुकाबला होगा और इसमें उनके पास गोलकीपिंग के साथ ही टीम की कमान संभालने की जिम्मेदारी रहेगी। गुरप्रीत के कप्तान बनाए जाने के बाद टीम के कोच स्टिमक ने कहा कि उन्हें कप्तानी सौंपना कोई कठिन काम नहीं था। 32 साल के गुरप्रीत ने अब तक 71 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं और टीम के सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। स्टिमक ने कहा कि गुरप्रीत ने पिछले 5 साल में सुनील और संदेश के साथ कुछ मैचों में कप्तानी की जिम्मेदारी निभाई है और वो स्वाभाविक रूप से इसके अधिकारी थे। कतर के खिलाफ अगर भारत हारती है तो वह विश्व कप के तीसरे चरण के क्वालीफायर से बाहर हो जाएगी।

अडानी ग्रुप की कंपनीयों मे रिकवरी से मालामाल हो रहे गौतम अडानी

मुंबई (एजेंसी)। अडानी ग्रुप की कंपनियों के शेयरों में रिकवरी से समूह के मालिक गौतम अडानी की नेटवर्थ में इजाफा हो रहा है। साथ ही दुनिया के सबसे अमीर लोगों की लिस्ट में फिर आगे बढ़ रहे अडानी है। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के अनुसार, गौतम अडानी की नेटवर्थ में 198 मिलियन डॉलर यानी 1653 करोड़ रुपए का इजाफा हुआ है। इससे उनकी नेटवर्थ 107 अरब डॉलर पर पहुंच गई है। गौतम अडानी की नेटवर्थ में इस साल अब तक 22.8 अरब डॉलर का इजाफा हुआ है। नेटवर्थ में आए उछाल से गौतम अडानी दुनिया के 13वें सबसे अमीर व्यक्ति बन गए हैं। गौतम से आगे 12वें स्थान पर स्थित मिशेल डेल की नेटवर्थ भी 107 अरब डॉलर ही है। वहीं रिलायंस इंडस्ट्रीज के मालिक मुकेश अंबानी की नेटवर्थ में गिरावट दर्ज की गई। मुकेश अंबानी की नेटवर्थ में 161 मिलियन डॉलर यानी 1344 करोड़ रुपए की गिरावट आई है।

बढ़त के साथ बंद हुआ शेयर बाजार

सेंसेक्स 76606 के स्तर और निफ्टी 23,322 के लेवल पर

मुंबई (एजेंसी)। घरेलू शेयर बाजारों में बुधवार (12 जून) को हल्की बढ़त के साथ कारोबार की शुरुआत हुई। हालांकि पहले घंटे में ही बाजार बढ़िया तेजी दर्ज कर रहा है। निफ्टी 23,430 के नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। कारोबार के अंत में सेंसेक्स 149 अंकों की बढ़त के साथ 76,606 के स्तर जबकि निफ्टी 58 अंकों की मजबूती के साथ 23,322 के स्तर पर बंद हुआ। अमेरिकी बाजार में मंगलवार को मिला-जुला कारोबार रहा। डॉओ जोन्स 0.31त्न की तेजी के साथ 38,747 पर बंद हुआ। वहीं S&P 0.27 प्रतिशत चढ़कर 5,375.32 पर बंद हुआ।

विदेशी संस्थागत निवेशकों ने 11 जून को 111.04 करोड़ रुपए के शेयर बेचे। घरेलू संस्थागत निवेशकों ने 3,193.29 करोड़ रुपए के शेयर खरीदे। इससे सेंटिमेंट तेजी के कारोबार के हैं। आज शाम को मई के रिटेल महंगाई के आंकड़े जारी होंगे। एक्सपर्ट्स के अनुसार इसमें कमी आ सकती है। अप्रैल में रिटेल महंगाई दर 4.83त्न पर थी। इससे मार्केट को सपोर्ट मिल रहा। इससे पहले कल यानी 11 जून को बाजार में फ्लैट कारोबार देखने को मिला था। सेंसेक्स 32 अंक गिरकर 76,457 के स्तर पर बंद हुआ था। वहीं निफ्टी 5 अंक चढ़कर 23,264 के स्तर पर बंद हुआ था। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 15 में तेजी और 15 में गिरावट रही थी।

सोने चांदी की कीमतों मे आया उछाल

घरेलू बाजार में बुधवार को सोने और चांदी की कीमतों में तेजी आई। आज दोनो ही धातुओं की वायदा कीमतों में तेजी रही। कारोबार के दौरान सोने के वायदा भाव 71,600 रुपये वहीं चांदी के वायदा भाव 89,300 रुपये के करीब कारोबार कर रहे थे। दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की वायदा कीमतों में उछाल रहा। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त अनुबंध आज 33 रुपये बढ़कर 71,523 रुपये पर खुला। यह अनुबंध 80 रुपये की तेजी के साथ 71,570 रुपये के स्तर पर कारोबार कर रहा था। ये 71,594 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 71,523 रुपये के भाव पर दिन के निचला स्तर पर पहुंचा। सोने का वायदा भाव पिछले महीने 74,442 रुपये के भाव पर पहुंचा था। वहीं चांदी की वायदा कीमतों की शुरूआत में आज बढ़त रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क जुलाई अनुबंध आज 587 रुपये की तेजी के साथ 89,250 रुपये पर खुला। यह अनुबंध 654 रुपये की तेजी के साथ 89,317 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। ये 89,321 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 89,250 के भाव पर दिन निचला स्तर पर पहुंचा। पिछले माह चांदी की वायदा कीमतें 96,493 रुपये के भाव पर दिन के शीर्ष स्तर पर पहुंचीं। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने चांदी की वायदा कीमतों में आज तेजी रही रही। कॉमेक्स पर सोना 2,334 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। इसका पिछला बंद भाव 2,326.60 डॉलर प्रति औंस था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 29.38 डॉलर के भाव पर खुले। इसका पिछला बंद भाव 29.23 डॉलर था।

रिकी पोंटिंग ने रोहित शर्मा की कप्तानी को सराहा

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा की जमकर प्रशंसा की है। पोंटिंग ने कहा कि टी20 विश्व कप में जिस प्रकार से रोहित ने कप्तानी की है। उससे पता चलता है कि वह इसमें कितने कुशल हैं।

रोहित ने इस मैच में छोटे स्कोर का बचाव करते हए दबाव में आये बिना अपने गेंदबाजों पर भरोसा करते हुए उनका समर्थन किया। पोंटिंग ने एक वीडियो में कहा कि रोहित बहुत अनुभवी कप्तान हैं। मैंने उन्हें जब देखा तो कहा कि आपकी कप्तानी शानदार रही थी। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि वह इससे ज्यादा कुछ कर सकता था। आप उनकी टीम में मौजूद कई गेंदबाजों के बारे में सोचिए। उनके पास वास्तव में आईपीएल में भी ऐसे गेंदबाज हैं, सिर्फ भारत के लिए नहीं। पोंटिंग ने कहा कि इसलिए वह उन्हें समझते हैं और जानते हैं कि उन्हें कब इस्तेमाल करना है। साथ ही कहा कि कप्तान के लिए योजना बनाना एक बात है, गेंदबाजों के लिए उसे अमल में लाना अलग बात है। हार्दिक पंड्या ने उस मैच में काफी अच्छा प्रदर्शन किया। एक समय पाक टीम काफी अच्छी स्थिति में थी और 48 गेंदों पर जीत के लिए 48 रन ही बनाने और उसके पास काफी विकेट थे। इसके बाद भारतीय गेंदबाजों जसप्रीत बुमराह , पंड्या और मोहम्मद सिराज ने भारतीय टीमा को मैच में वापसी करायी।

फ्रैंच ओपन खिताब जीतने से उत्साहित अल्कारेज ने बनवाया एफिल टॉवर का टैटू

पेरिस (एजेंसी)। फ्रैंच ओपन खिताब जीतने से उत्साहित स्पेन के कार्लोस अल्कारेज का लक्ष्य अब एक जुलाई से विम्बलडन टेनिस टूर्नामेंट के लिए अभ्यास करना रहेगा हालांकि अभी वह ग्रैंड स्लैम खिताबों का जश्न मनाने में लगे हैं। इसी के तहत ही उन्होंने अपनी पहली फ्रेंच ओपन चैंपियनशिप जीतने की तारीख और एफिल टॉवर का टैटू बनाया है। रोला गैरा की जीत को याद रखने के लिए अल्कारेज ने ये टैटू बाएं टखने के पास बनवाया है। उनके टखने पर पहले से ही 2023 विंबलडन जीत की तारीख और एक स्ट्रॉबेरी की छवि बनी है। उनके बाएं हाथ पर उनकी पहली ग्रैंडस्लैम ट्रॉफी की तारीख है जो 2022 अमेरिकी ओपन में आई थी। अल्कारेज जिस गति से आगे बढ़ रहे हैं उससे ऐसा लगा है कि आने वाले समय में उनके पास टूटू के लिए जगह कम पड़ जाएगी।

उन्होंने हालांकि कहा है वह अपने करियर के बाकी समय में हर ग्रैंडस्लैम जीत की तारीख अपने शरीर पर नहीं लिखेंगे। इसकी जगह वह सबसे अहम टूर्नामेंट में से प्रत्येक के पहले खिताब की तारीखों तक ही सीमित रहेंगे। इसका मतलब है कि वह अब केवल ऑस्ट्रेलिया ओपन की तारीख अंकित करवाएंगे। 21 साल के अल्कारेज क्ले, ग्रास और हार्ड कोर्ट पर ग्रैंडस्लैम खिताब जीतने वाले सबसे कम उम्र के पुरुष खिलाड़ी हैं। इसके अलावा वह 19 साल की उम्र में एटीपी रैंकिंग में नंबर एक पर पहुंचने वाले सबसे कम उम्र के पुरुष खिलाड़ी बने थे।उन्होंने कहा, ''मेरा खेल हर सतह के अनुकूल है क्योंकि मैं उसका अभ्यास करता रहता हूं।'' उन्होंने सबसे पहले क्ले कोर्ट पर खेल सीखा। वह खुद को हार्ड कोर्ट पर सबसे अधिक सहज पाते हैं। उन्होंने वहां उत्कृष्टता हासिल करने की कोशिश की क्योंकि अधिकांश टूर्नामेंटों में इसका उपयोग किया जाता है।

शेयर निवेशकों से धोखाधड़ी के मामले में टीवी एंकर पर सेबी का बड़ा एशन

ठोका जुर्माना

मुम्बई (एजेंसी)। बाजार रेगुलेटरी सेबी ने एक टेलीविजन चैनल पर शेयर बाजार पर केंद्रित कार्यक्रम पेश करने वाले प्रदीप पंड्या और सात अन्य लोगों एवं फर्मों को मंगलवार को प्रतिभूति बाजार से पांच साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया। इसके अलावा धोखाधड़ी वाली कारोबारी गतिविधियों में लिप्त होने के लिए इन पर सामूहिक रूप से 2.6 करोड़ रुपए का जुर्माना भी लगाया गया है।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने पूर्व टीवी एंकर पंड्या के अलावा अल्पेश फुरिया, मनीष फुरिया, अल्पा फुरिया, अल्पेश वासंजी फुरिया एचयूएफ, मनीष वी फुरिया एचयूएफ, महान इन्वेस्टमेंट और तोशी ट्रेड के खिलाफ प्रतिबंध लगाए हैं। पंड्या अगस्त, 2021 तक एक बिजनेस चैनल में विभिन्न कार्यक्रमों को पेश करते थे जबकि अल्पेश फुरिया अतिथि विशेषज्ञ के तौर पर टीवी चैनल पर नजर आए और उन्होंने अपने ट्विटर हैंडल पर शेयरों के बारे में सिफारिशें भी दी थीं। टीवी शो 'पंड्या का फंडा' में शेयरों के बारे में दिए गए प्रदीप पंड्या के सुझावों और नवंबर, 2019 से जनवरी, 2021 के दौरान अल्पेश फुरिया और संबंधित फर्मों द्वारा निष्पादित 'आज खरीदें-कल बेचें' और इंट्रा-डे सौदों के बीच तगड़ा अंतर्संबंध देखा गया था। सेबी ने 55 पृष्ठ के अपने अंतिम आदेश में कहा, 'प्रदीप पंड्या ने चैनल के लिए एंकर के रूप में काम करते हुए अल्पेश फुरिया के साथ आगामी स्टॉक अनुशंसाओं के बारे में गोपनीय जानकारी साझा की और अल्पेश फुरिया ने इस विशिष्ट सूचना का फायदा उठाते हुए अपने खातों और संबंधित संस्थाओं के जरिये शेयरों का कारोबार किया। इस तरह फुरिया ने शेयर अनुशंसाओं के सार्वजनिक प्रसारण से पहले खुद को लाभ में लाने की स्थिति में रखा। नियामक ने यह भी कहा कि फुरिया ने वेतन वृद्धि के बदले में ये सुझाव ओपू फुनिकांत नाग के साथ भी साझा किए। सेबी के मुताबिक, यह आचरण न केवल भेदिया सूचना का लाभ उठाने के स्पष्ट इरादे को दर्शाता है, बल्कि निजी लाभ के लिए सूचना विषमता का फायदा उठाने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण को भी दर्शाता है।

दिसंबर, 2020 में, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ने एक रिपोर्ट में अल्पेश फुरिया और संबंधित संस्थाओं की व्यापारिक गतिविधियों का विश्लेषण किया था। इसके बाद, सेबी ने नवंबर, 2020 और जनवरी, 2021 के बीच इस मामले में आगे का विश्लेषण किया था। नियामक ने पंड्या और अल्पेश फुरिया के कॉल डेटा रिकॉर्ड के विश्लेषण में यह पाया कि पंड्या को सिफारिशों से संबंधित जानकारी तक अग्रिम पहुंच हासिल करने की विशिष्ट स्थिति थी। पंड्या ने अल्पेश फुरिया और संबंधित संस्थाओं को जानकारी दी। सेबी ने पंड्या, अल्पेश फुरिया और अन्य छह संस्थाओं को प्रतिभूति बाजार में प्रवेश करने से रोक दिया है। इसके साथ उन पर प्रतिभूतियों की खरीद, बिक्री या अन्यथा लेनदेन, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से या किसी भी तरह से प्रतिभूति बाजार से जुड़े होने पर पांच साल के लिए रोक लगा दी है। नियामक ने पंड्या और अल्पेश फुरिया पर एक-एक करोड़ रुपए और शेष छह इकाइयों पर 10-10 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। इसके अतिरिक्त, सेबी ने अल्पेश फुरिया, इसके संबंधित खातों के साथ-साथ ओपु फनिकांत नाग को धोखाधड़ी वाले व्यापार से अर्जित अवैध लाभ लौटाने का निर्देश दिया है। अल्पेश फुरिया और इसके संबंधित खातों ने 10.73 करोड़ रुपए का अवैध लाभ कमाया था जिसमें से 8.4 करोड़ रुपए पहले ही सेबी द्वारा जब्त किए जा चुके हैं।

सैमसंग ने लांच की यूएलईडी प्रीमियम टीवी सीरीज

भारत में है 65,990 रुपये की शुरुआती कीमत

नई दिल्ली (एजेंसी)। साउथ कोरियाई कंपनी सैमसंग ने भारत में 2024 क्यूएलईडी 4के टीवी सीरीज लॉन्च की। इस टीवी की शुरुआती कीमत 65,990 रुपये की है। 2024 क्यूएलईडी 4के टीवी लाइन-अप ढेर सारे प्रीमियम फीचर्स के साथ आता है। सैमसंग इंडिया के विजुअल डिस्प्ले बिजनेस के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट मोहनदीप सिंह ने कहा, पिछले कुछ सालों में कॉन्टेंट की खपत में तेजी से बदलाव आया है। यूजर्स ज़्यादा शानदार और प्रीमियम व्यूइंग एक्सपीरियंस की मांग कर रहे हैं। इस मांग को पूरा करने के लिए हमने 2024 क्यूएलईडी 4के टीवी सीरीज़

लॉन्च की है, जो प्रीमियम और बेहतरीन व्यूइंग एक्सपीरियंस की दुनिया में एक नया कदम है। 2024 क्यूएलईडी 4के टीवी सीरीज़ क्वॉन्टम प्रोसेसर लाइट 4के दिया गया है। यह एक शक्तिशाली प्रोसेसर है जो विज़ुअल और ऑडियो पोजीशन को जरूरत के मुताबिक सेट करता है। यूजर्स चाहे जो भी कंटेंट देख रहे हों, उसका रिज़ॉल्यूशन कुछ भी हो, अल्टीमेट 4के अपस्केलिंग फीचर बेहतरीन विज़ुअल प्रदान करता है। यूजर इस पर रियल पिक्चर क्वालिटी का आनंद ले सकते हैं कि टीवी अपने आप लगभग-4के लेवल में अपग्रेड हो जाता है। किसी कॉन्टेंट के देखने और सुनने के अनुभव को शानदार बनाने के लिए 2024 क्यूएलईडी 4के टीवी सीरीज़, क्यू-सिंफनी, ओटीएस लाइट और अडेप्टिव साउंड फीचर्स से लैस है, जिससे यूजर्स ऑन-स्क्रीन मूवमेंट को ऐसे महसूस कर सकते हैं जैसे कि वह वास्तविक हो। इसके अलावा सैमसंग की टीवी प्लस सेवा भी शामिल है जिसमें 100 से ज्यादा मुफ़्त चैनल शामिल हैं। सैमसंग दुनिया को प्रेरित करते हुए बदलाव लाने वाले विचारों और तकनीकों के साथ भविष्य को आकार देता है। टीवी तीन साइज - 55 इंच, 65 इंच और 75 इंच में आएगा। यह सैमसंग डॉट कॉम और अमेजन डॉन इन पर उपलब्ध है।

पेट्रोल, डीज़ल जीएसटी की दयरे में आया तो कम होंगी कीमतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। घरेलू बाजार में पेट्रोल, डीजल की कीमतें कम हो सकती है। ऐसा इसके जीएसटी के दायरे में आने के कारण होने की संभावना है। अभी ये दोनो ही इस दायरे से बाहर हैं। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी के पेट्रोलियम मंत्री बनने के बाद से ही ईंधन की कीमतें घटने की संभावनाएं जतायी जा रही हैं। इसका कारण है कि सरकार पेट्रोल, डीजल और प्राकृतिक वस्तुओं को जीएसटी (जीएसटी) के दायरे में ला सकती है। अगर ऐसा हुआ तो ईंधन की कीमतें घटना तय है। पिछले कार्यकाल में भी पुरी ने

कहा था कि पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के दायरे में लाने के प्रयास हो रहे हैं। जोर दिया है. यहां तक कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी पिछले साल नवंबर में कहा था कि इसे लागू करने से लोगों को फायदा होगा। साथ ही कहा कि इसे जीएसटी के तहत लाने के लिए राज्यों से भी बात करन होगी क्योंकि उसे इसी से सबसे अधिक राजस्व मिलता है। वहीं अगर पेट्रोल और डीजल पर मौजूदा टैक्स सिस्टम को खत्म कर जीएसटी लागू किया गया तो इनकी कीमतें काफी कम हो सकती हैं। अभी पेट्रोल की खुदरा कीमत में लगभग 55 फीसदी हिस्सा केंद्र और राज्य के करों का हिस्सा है। मौजूदा समय में जीएसटी में करों को चार स्लैब ङ्क 5 फीसदी, 12 फीसदी, 18 फीसदी और 28 फीसदी में बांटा गया है। ऐसे में अगर 28 फीसद वाले सबसे महंगे स्लैब में ईंधन को रखा गया तब भी पेट्रोल की कीमतें मौजूदा रेट से काफी कीम हो जाएगी।

टी 20 विश्वकप मे अबतक हावी रहे गेंदबाज

न्यूयार्क (एजेंसी)। अमेरिका में पहली बार खेले जा रहे आईसीसी टी20 विश्वकप क्रिकेट टूर्नामेंट में अब तक गेंदबाज हावी रहे हैं। यहां तक कि टीम की जीत भी गेंदबाज ही तय कर रहे हैं। अभी तक केवल ऑस्ट्रेलियाई टीम ही यहां 200 के आंकड़े तक पहुंच पायी है। वहीं अधिकतर टीम 150 रनों के अंदर ही सिमटी हैं। अभी तक खेले गये 21 लीग मुकाबलों में गेंदबाज इस तरह हावी रहे कि कोई भी बल्लेबाज शतक नहीं लगा पाया है। फिर चाहे सामने कमजोर टीम हो या बराबरी के स्तर वाली। सबसे अधिक विकेट लेने के मामले में अफगानिस्तान के गेंदबाज फजलहक फारुकी दो मैचों में नौ विकेट लेकर सबसे आगे चल रहे है। वहीं दक्षिण अफ्रीका के एनरिक नॉर्खिया तीन मैचों में नौ रन प्रति ओवर की औसत के साथ आठ विकेट लेकर दूसरे स्थान पर है। वेस्टइंडीज के अकील हुसैन दो मैचों में सात की औसत से छह विकेट के साथ तीसरे, चौथे स्थान पर अफगानिस्तान के राशिद खान दो मैचों में आठ रन की औसत के साथ छह विकेट लिये है। ओमान के मेहरान खान तीन मैच आठ रन प्रति ओवर की औसत से छह विकट पाचवें स्थान पर है। वहीं भारत के जसप्रीत बुमराह दो मैच में 8.40 की औसत से छह विकेट लेकर छठें स्थान पर है। दक्षिण अफ्रीका के ओट्टनील बार्टमैन तीन मैच 14.40 के साथ पांच विकेट के साथ सातवें स्थान पर है।

श्रीलंका के नुवान तुषारा और नीदरलैंड के लोगन वैन वीक दो मैच में 8.40 की औसत से पांच-पांच विकेट के साथ संयुक्त रुप से आठवें और नौवें स्थान पर है। युगांडा के ब्रायन मसाबा तीन मैच 14.40 की औसत के साथ पांच विकेट लेकर दसवें स्थान पर है। टी-20 विश्वकप इतिहास में कुल सात गेंदबाज ने अब तक सबसे अधिक विकेट लेने की उपलब्धि हासिल है, जिसमें चार गेंदबाज एशिया से हैं। वर्ष 2007 और 2009 में पाकिस्तान के उमर गुल, साल 2021 और 2022 में श्रीलंका के वनिंदु हसरंगा दो ऐसे गेंदबाज हैं जिन्होंने इस प्रतियोगिता में दो बार सबसे अधिक विकेट हासिल करने की उपब्लब्धि हासिल थी।

नए कलेवर मे रतार भरने को तैयार है नई स्विट

अब 3 सिलिंडर इंजन के साथ आती है नई कार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय बाजार में फिर से नई स्विफ्ट नए रंग रूप के साथ रफ़्तार भरने को तैयार है। पहले स्विफ्ट में 1.2 लीटर का 4 सिलिंडर इंजन आता था, लेकिन अब यह 3 सिलिंडर इंजन के साथ आती है। मारुति द्वारा स्विफ्ट में इंट्रोड्यूस किया गया झेड सीरीज एक नया इंजन है। ख़ास बात यह है कि ये एक बेहतरीन थ्री सिलिंडर इंजन है, जो रिफाइन तो है ही और इसका रिस्पांस भी काफ़ी अच्छा है। यह इंजन कंपीटिशन में आने वाले थ्री सिलिंडर इंजन से काफ़ी बेहतर है। ना तो ज़्यादा शोर करता है, ना ही ज़्यादा वाइब्रेशन।

हमे इस गाड़ी चलाने का मज़ा मैन्युअल गियरबॉक्स के साथ आया हालाँकि एएमटी भी अच्छा है। अगर आप इस गाड़ी को ख़रीदना चाहते है तो दोनों की टेस्ट ड्राइव ज़रूर लें। स्विफ्ट 2024 में आपको 6 एयरबैग, 3 पॉइंट सीटबेल्ट वह भी सारे पैसेंजर्स के लिए, हिल होल्ड एसिस्ट, एबीएस प्लस

ईबीडी और इसोफिक्स चाइल्ड सीट माउंट्स भी मिलते हैं। यानी की ये अब पहले से ज़्यादा सेफ है। इसके इलावा इसमें कनेक्टेड फ़ीचर्स भी दिए हुए है। अगर आपको एक ऐसी हैचबैक चाहिए जो अपने सेगमेंट में सबसे ज़्यादा माइलेज दे तो आप स्विफ्ट ख़रीद सकते हैं। स्विफ्ट लवर है तो आप पुरानी स्विफ्ट को नयी स्विफ्ट से रिप्लेस कर सकते हैं। इसका नया डिज़ाइन क़ाबिले तारीफ़ है और इंटीरियर भी स्मार्ट लुकिंग है, चलने तो बढ़िया है ही, हो सकता है रफ़्तार पसंद लोगों को इंजन थोड़ा कमजोर लगे और मौजूदा 4 सिलिंडर इंजन के मुक़ाबले पावरफुल महसूस ना हो फिर भी यह एक बेस्ट थ्री सिलिंडर इंजन है।

आप यह भी सोच सकते हैं कि स्विफ्ट का प्राइस मारुति सुज़ुकी बलेनो के आस पास है और उसे ख़रीदना चाहें, लेकिन यक़ीन माने स्विफ्ट का अपना एक चार्म है। नई स्विफ्ट का डिज़ाइन पहले जैसा ही है लेकिन ये पहले से और भी ज्यादा शॉर्प हो गई है। इसमें नया बंपर, नए डिज़ाइन का रेडिएटर ग्रिल दिया गया है। नए हेडलैंप और फॉग-लैंप भी कार के फ्रंट को बिल्कुल फ्रैश लुक देते हैं। वहीं इसके प्राइज की बात करें तो यह 6.49 लाख रुपये से शुरू होकर 9.65 लाख रुपये एक्स शोरूम तक जाता है। मैन्युअल गियरबॉक्स के साथ नई स्विफ्ट लगभग 24.80 किमी प्रति द्य और एएमटी के साथ आपको 25.75 किमी प्रति द्य की माइलेज देगी।

तेज रफ्तार पिकअप पलटी

दो महिलाओं की मौत, 25 घायल, कैमा स्टेशन के पास हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना शहर के पास ग्राम कैमा में तेज रफ्तार पिकअप पलट जाने से दो महिलाओं की मौत हो गई, जबकि लगभग 25 लोग घायल हो गए। घायलों को सतना जिला अस्पताल लाया गया है।

जानकारी के मुताबिक, सगमा – कैमा मार्ग पर कैमा स्टेशन के पास मंगलवार की रात लगभग 1 बजे एक तेज रफ्तार पिकअप बेकाबू होकर पलट गई। इस हादसे में सीमा कोल पति रोशन लाल कोल (26) व संगीता कोल पति लालमन कोल (25) दोनों निवासी चुरहा कसेरुआ, अहिरान डांडी मानिकपुर जिला चित्रकूट धाम उत्तर प्रदेश की मौत हो गई। इनके अलावा उस वक्त पिकअप में सवार रहे 25 अन्य मजदूर घायल हो गए जिनमें से रानी कोल, गुड़िया साकेत, विमला साकेत, संतोषिया वर्मा, रामसुखी साकेत, प्रेमा साकेत, लीला चौधरी व कलावती साकेत की हालत गंभीर बताई जाती है। बताया जाता है कि मृतकाओं और घायलों समेत सभी लोग चुरहा कसेरुआ, अहिरान डांडी मानिकपुर यूपी के रहने वाले हैं और तेंदूपत्ता संग्रहण तथा बिक्री का काम करते हैं। इनके तेंदूपत्ते के 27 झाल मंगलवार की रात सगमा स्टेशन पर ट्रेन से उतारे गए थे। वहां से खरीददार की तरफ से भेजे गए पिकअप वाहन में झाल लोड कर ये सतना ला रहे थे। उसी पिकअप में मृतकाओं और घायलों समेत सभी लोग बैठे भी थे।

सगमा स्टेशन से कुछ आगे बढ़ने पर पिकअप चालक को संदेह हुआ कि पुलिस उसका पीछा कर रही है लिहाजा बचने के लिए वो वाहन को तेजी से भगाने लगा। कैमा स्टेशन के पास उसका वाहन बेकाबू हो कर सड़क से लगभग 6 फुट नीचे जा गिरा और दो पलटी खा कर सीधा हो गया। लेकिन तब तक उस पर सवार लोग नीचे जा गिरे थे। चालक ने उनकी परवाह किये बगैर वाहन को फिर दौड़ाया और वहां से भाग खड़ा हुआ।

रात लगभग 1 बजे हुए इस हादसे के दौरान मजदूर वहीं पड़े रह गए। सुबह किसी ने पुलिस को सूचना दी तो सभी को जिला अस्पताल लाया गया जहां सीमा और संगीता को मृत घोषित कर दिया गया। शेष घायलों का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है जिनमे से 8 को हालत नाजुक है।

सगमा में उतरता है दो नंबरी पत्ता-बताया जाता है कि अवैध रूप से तेंदूपत्ते की खेप ट्रेन से सगमा स्टेशन पर उतारी जाती है। यहां वह ठेकेदार अपना वाहन भेजता है जिससे उस पत्ते का सौदा तय होता है। वाहन में लोड कर पत्ते को ठेकेदार के गोदाम तक ले जाया जाता है लेकिन उसके साथ वे लोग भी जाते हैं जिनका पत्ता होता है। जो पिकअप वाहन दुर्घटना का शिकार हुआ उसमे भी ऐसा ही तेंदूपत्ता लोड था। कोलगवां थाना पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म का आरोपी जीआरपी ने पकड़ा

स्टेशन से ऑटो में बैठाकर ले गया था, दो आरोपियों की तलाश अभी भी जारी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना रेलवे स्टेशन से लाई जाई गई नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना को अंजाम देने वाले आरोपियों में से एक को सतना जीआरपी ने गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में दो आरोपियों की तलाश अब भी जारी है। जीआरपी सूत्रों के मुताबिक, पिछले दिनों हुई नाबालिग के साथ सामूहिक रेप की सनसनीखेज वारदात को अंजाम देने वाले एक आरोपी रोहन गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया गया है। उसका ऑटो रिक्शा भी जब्त किया गया है। जीआरपी ने बुधवार को आरोपी का मेडिकल कराया और उसे अदालत में पेश कर दिया। इस मामले में दो आरोपियों की तलाश अभी जारी है। हालांकि सन्देह के आधार पर एक संदेही को हिरासत में लेकर पूछताछ भी की जा रही है।

जीआरपी सूत्रों ने बताया कि कल्याण से लौट कर सतना स्टेशन पहुंची सीधी निवासी 16 वर्षीया नाबालिग सतना रेलवे स्टेशन में सबसे पहले रोहन गुप्ता के ही संपर्क में आई थी। सीधी जाने के लिए किराये के पैसों का प्रबंध करने की बात पर बरगला कर रोहन ही उसे अपने साथ ऑटो में लेकर गया था। वह उसे पतेरी और फिर वहां से मैहर के गया जहां उसने नाबालिग के साथ रेप किया।

उसके वापस छोड़ने के बाद दो अन्य युवक नाबालिग को बाइक से अपने साथ ले गए और दुष्कर्म करने के बाद उसे जैतवारा थाना क्षेत्र के एक गांव में छोड़ आये। जहां ग्रामीणों की नजर पड़ने पर उन्होंने पुलिस कप इत्तिला की। जैतवारा पुलिस नाबालिग को थाना ले गई और फिर जीरो पर अपराध कायम कर डायरी सतना जीआरपी को भेज दी।

कश्मीर में श्रद्धालुओं पर आतंकी हमले का विरोध

हिंदूवादी संगठनों ने आतंकवाद का पुतला जलाया, पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी की

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जम्मू में दर्शनार्थियों की बस और सेना के बेस पर हुए आतंकी हमले पर हिंदूवादी संगठनों का गुस्सा फूट पड़ा है। इन घटनाओं के विरोध में विहिप और बजरंग दल सड़क पर उतर आए हैं। सतना में भी घटनाओं के विरोध में प्रदर्शन कर राष्ट्रपति के नाम संबोधित ज्ञापन सौंपा गया।

गौरतलब है कि बुधवार को सतना में बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने जम्मू में लगातार हो रहे। आतंकी हमलों की निंदा करते हुए नाराजगी जताई और आतंकवाद का पुतला फूंका। हाथों में तख्ती लिए सड़क पर उतरे बजरंगदल कार्यकर्ताओं ने पाकिस्तान के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

आतंकवाद के पुतले को आग के हवाले करते हुए सरकार से इसका दमन करने की मांग उठाई। इस दौरान राष्ट्रपति के नाम संबोधित एक ज्ञापन भी प्रशासन को सौंपा गया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि देश मे एक बार फिर आतंकवाद ने सिर उठाया है। सरकार को इसका मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए और आतंकवादियों को कुचलना चाहिए।

बजरंगदल के प्रांतीय पदाधिकारी सचिन शुक्ला ने कहा कि देश मे हुए आम चुनाव के बाद एकाएक आतंकी घटनाओं में इस तरह का इजाफा होना कहीं न कहीं यह संकेत देता है कि नतीजों से आतंकियों के हौसले बुलंद हुए हैं। आतंकियों ने एक बार फिर कायराना हरकतें शुरू कर दी हैं। रियासी में दर्शनार्थियों की बस पर हमला कर जो हरकत आतंकियों ने की है,वह बर्दाश्त के काबिल नही है।

सरकार को शीघ्र ही आतंकियों और उनके रहनुमाओं को सबक सिखाना चाहिए।

ज्ञापन सौपने वालों में विहिप प्रांत सह मंत्री सागर गुप्ता, विहिप जिलाध्यक्ष लखन केसरवानी, विक्रम चौधरी, बजरंग दल प्रान्त संयोजक यतेंद्र पाठक, सचिन शुक्ला, रावेंद्र सिंह, बैजनाथ त्रिपाठी, रमेश मिश्रा, अरुण पाण्डेय,बजरंग दल विभाग सह संयोजक अबीर द्विवेदी, सत्य प्रकाश,मुकेश गौतम,राजा सिंह, मनीष शर्मा, दिलीप त्रिपाठी, विकास शुक्ला, ऋषभ शुक्ला, श्री निवास कचेर, राकेश तिवारी, आदर्श त्रिपाठी, बादल चतुर्वेदी, राम शरण सिंह, छोटू उर्मलिया, धनंजय चतुर्वेदी, निशा जायसवाल, ममता खरे, मिथलेश तिवारी, प्रेमलता द्विवेदी, मंजू श्रीवास्तव, रीता त्रिपाठी सहित अन्य लोग शामिल रहे।

साइबर सेल की मदद से दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार

नाबालिग को बंधक बनाकर कर रहा था रेप

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। नाबालिग को बंधक बनाकर उसके साथ बलात्कार करने के एक मामले में मैहर पुलिस ने दुष्कर्म के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को अदालत में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

जानकारी के मुताबिक, मैहर थाना पुलिस ने दुष्कर्म के आरोप में राम सुशील साहू (24) निवासी भैंसासुर, मैहर को गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ आईपीसी की धारा 366, 376 (2) छ, व 5ध् 6 पॉक्सो एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।

पुलिस ने बताया कि मैहर कस्बे से 15 वर्षीय नाबालिग लापता हो गई थी। परिजनों ने उसके अपहरण की आशंका जताते हुए थाना में शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस पिछले कई महीने से नाबालिग की तलाश में लगी थी। तमाम संभावित स्थानों पर परिजनों ने भी तलाश की थी और पुलिस ने भी छापामारी की थी लेकिन कहीं कोई सुराग नहीं लगा था।

इस काम में साइबर सेल की भी मदद ली गई थी। तमाम कोशिश के बाद आखिर पुलिस के हाथ कामयाबी लगी। एक घर से पुलिस ने नाबालिग को मुक्त करा लिया। पीड़िता ने अपने बयान में पुलिस को बताया कि आरोपी राम सुशील उसे बहला फुसला कर अपने साथ ले गया था। उसने दुष्कर्म किया और फिर बंधक बना कर लगातार घिनौनी हरकत करता रहा।

अतिवर्शा एवं बाढ़ की स्थिति की सूचनायें कंट्रोल रुम को दी जा सकेंगी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जिले में अतिवर्षा एवं बाढ़ की स्थिति संबंधी सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिये जिला स्तरीय कंट्रोल रुम 15 जून से 30 सितंबर तक निरंतर कार्यरत रहेगा। कंट्रोल रुम के दूरभाष क्रमांक 07672-223211 पर अतिवर्षा एवं बाढ़ की सूचना दी जा सकेगी। यह कंट्रोल रुम कलेक्ट्रेट भवन के प्रथम तल पर कक्ष क्रमांक एफ-19 में स्थापित कर तीन पालियों में संचालित होगा।

कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट अनुराग वर्मा द्वारा जारी आदेशानुसार डिप्टी कलेक्टर गोविंद सोनी को जिला स्तरीय कंट्रोल रुम का प्रभारी एवं अधीक्षक भू-अभिलेख मुन्नालाल तिवारी को सहायक प्रभारी नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार प्रात: 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक की प्रथम पाली में उप स्वच्छता पर्यवेक्षक अमित गुप्ता, पंप अंटेंडेंट संदीप दहायक एवं महेश कुमार अहिरवार की ड्यूटी लगाई गई है। जारी आदेशानुसार दोपहर 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक की द्वितीय पाली में सहायक ग्रेड-3 मोहम्मद सलमान, उप स्वच्छता पर्यवेक्षक सुनील चौरसिया, भृत्य रामाश्रय मिश्रा तथा रात्रि 10 बजे से प्रात: 6 बजे की तृतीय पाली में सचिव हरिमोहन शुक्ल, सहायक ग्रेड 3 दिलीप निगम और भृत्य रामबहोरी की तैनाती की गई है।

कलेक्टर मैहर की समझाईस पर स्वेच्छा से हटाया गया सुखऊआ तालाब का अतिक्रमण

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। राज्य शासन के निर्देशानुसार जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायत एवं नगरीय निकायों में 5 जून से 16 जून गंगा दशहरा तक जलस्त्रोतों तथा नदी, तालाबों, कुओं, बावड़ी तथा अन्य जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पुनर्जीवन का अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में बुधवार को नगर पालिका मैहर के वार्ड क्रमांक 20 के सुखऊआ तालाब में जल गंगा संवर्धन अभियान की गतिविधियों का कलेक्टर मैहर रानी बाटड द्वारा निरीक्षण किया गया। अभियान की गतिविधियों के संचालन में एवं तालाब के सफाई के कार्य में तालाब की भूमि पर किया गया अतिक्रमण बाधक बन रहा था। जिस पर कलेक्टर मैहर रानी बाटड ने रहवासियों से चर्चा करते हुये अतिक्रमण हटाने की समझाईस दी। कलेक्टर की समझाईस पर अतिक्रमणकारियों ने स्वेच्छा से तालाब की भूमि पर वर्षों से किये गये अतिक्रमण को हटा लिया। इस मौके पर सीएमओ लालजी ताम्रकार, संतोष सोनी, रेखा जयप्रकाश, जितेंद्र पांडये, नरेश चौधरी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं सदस्य उपस्थित रहें। कलेक्टर के मार्गदर्शन में चलाये गये अतिक्रमण अभियान में तालाब के चारों तरफ की 20-20 फिट जमीन को खाली कराया गया है।

जनभागीदारी से झिगोंदर में तालाब निर्माण के लिये किया जा रहा श्रमदान

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्रदेश सरकार द्वारा 5 जून से 16 जून तक के संपूर्ण पखवाड़ा को जल संरक्षण एवं संवर्धन के रूप में मनाने के लिये गये निर्णय के अनुसार जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के माध्यम से जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। अभियान के तहत नदी, तालाब, चेक डैम, नालों की साफ सफाई के कार्य को जनभागीदारी से किया जा रहा है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के समर्थन में बुधवार को नागौद विकासखंड के ग्राम झिगोंदर में कंदहली टोला में तालाब निर्माण का कार्य किया जा रहा है। तालाब निर्माण स्थल के आसपास के रहवासियों द्वारा निर्माण कार्य में जनभागीदारी निभाते हुये श्रमदान भी किया जा रहा है। अभियान की कड़ी में ग्राम झिगोंदर के कूपों की भी सफाई का कार्य कराया गया। अनुपयोगी कूपों में जमा मिट्टी, गाद और कूप की दीवालों पर उगी हुई वनस्पतियों को उखाड़कर कूप की सफाई की गई। इसके अलावा कूप की टूटी-फूटी जगत का भी नये सिरे से मरम्मत की गई है।

खेतों को उपजाऊ बनाने नदी, तालाब की गाद एवं मिट्टी किसानों को बिना रॉयल्टी नि:शुल्क मिलेगी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा के दौरान निर्देश दिये हैं कि खेतों को उपजाऊ बनाने नदी, तालाब एवं कुएं की गाद एवं मिट्टी किसानों को बिना रॉयल्टी की नि:शुल्क मिलेगी। सम्पूर्ण प्रदेश में नदी, तालाब एवं कुए से निकलने वाली गाद एवं मिट्टी को किसान अपने खेतों को उपजाऊ बनाने तथा समतल करने के लिए इसका परिवहन बिना रॉयल्टी के नि:शुल्क कर सकेंगे। नदी, तालाब व कुंए से निकाली गई गाद एवं मिट्टी का उपयोग व्यवसायिक प्रयोजन के लिए नहीं किया जा सकेगा।

मध्यप्रदेश गौण खनिज नियम 1996 के अनुसार नदी, तालाब, कुंए से निकाली गई गाद या मिट्टी को यदि किसानों को गैर व्यवसायिक प्रयोजनों के लिए आवश्यकता है, तो उनके आवेदन पर संबंधित शासकीय विभाग द्वारा गाद या मिट्टी को परिवहन करने की अनुमति दी जाएगी। इसके परिवहन के लिए किसानों को ना तो कोई रॉयल्टी देना होगा और ना ही परिवहन अनुज्ञा की आवश्यकता होगी। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में नदियों, तालाबों एवं कुंओं की सफाई के दौरान निकलने वाली गाद या मिट्टी का उपयोग खेतों को उपजाऊ बनाने के लिए किसान परिवहन कर सकते हैं। इसका उन्हें कोई शुल्क नहीं देना होगा।

सीएम हेल्पलाईन के प्रकरणों की संख्या नहीं बढ़ने दें, निराकरण पर करें फोकस

कलेक्टर मैहर की अध्यक्षता में समय-सीमा की बैठक संपन्न

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। कलेक्टर मैहर रानी बाटड की अध्यक्षता में बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार मैहर समय-सीमा की बैठक संपन्न हुई। बैठक में सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों की समीक्षा सहित आगामी दिवसों में आयोजित होने वाले शासकीय कार्यक्रमों की कार्ययोजना पर अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिये गये। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि विभागीय अधिकारी अपने-अपने विभागों में सीएम हेल्पलाईन की लंबित शिकायतों के निराकरण पर विशेष ध्यान दें। शिकायतों की संख्या में वृद्वि नहीं होने दें, निराकरण की गति बढ़ायें। कलेक्टर ने लंबित प्रकरणों की स्थिति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को अपने विभागों से संबंधित लंबित प्रकरणों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण कराने के निर्देश दिए। इस मौके पर अपर कलेक्टर शैलेंद्र सिंह, एसडीएम अमरपाटन आरती यादव, एसडीएम रामनगर डॉ आरती सिंह, डीपीओ सौरभ सिंह एवं सभी विभागो के अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में कलेक्टर रानी बाटड ने जनसुनवाई में प्राप्त होने वाली शिकायतो की समीक्षा करते हुए कहा कि सभी विभाग लंबित शिकायतो का दुगनी रफ्तार से निराकरण करें। शिकायतों को शिकायतकर्ता की सहमति से बंद कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर बाटड ने कहा कि जिले की उचित मूल्य की जिन दुकानों में सूचना पटल नहीं लगाया गया है। उन दुकानों में सूचना पटल लगवायें। जिसमें दुकान खुलने का दिन, समय, समिति का नाम, मोबाइल नंबर, सरपंच, सचिव, आशा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और पटवारी का नाम मोबाइल नंबर अवश्य रूप से अंकित रहना चाहिए। इसी तरह सभी शासकीय विद्यालय और आंगनवाड़ी केंद्रों के बाहर सूचना पटल लगा होना चाहिए। जिसमे भोजन का मेन्यू, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका का नाम और मोबाइल नंबर अंकित होना आवश्यक है।

कलेक्टर ने ने कहा कि जिले के जल स्त्रोतों नदी, तालाब, कुएं, बावड़ी तथा अन्य जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पुर्नजीवन के लिए 5 से 16 जून तक विशेष अभियान चलाया जा रहा है।। अभियान के दौरान जल स्त्रोतों के आसपास से अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही की जायें। जिले में अभियान के दौरान जल स्त्रोतों के संरक्षण, जीर्णोद्धार व उन्नयन कार्यक्रम की प्रतिदिन मॉनिटरिंग करें। बैठक में मैहर जिले के तीनों ब्लाक में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत किए जा रहे तालाब, पोखर, बावड़ियों और कुएं की साफ सफाई और जीर्णोद्धार के कार्यों समीक्षा की गई। साथ ही 21 जून को पौधारोपण करने के लिए सभी विभागो को निर्देशित किया गया। कलेक्टर बाटड ने कहा की प्रत्येक ब्लाक में पौधारोपण किया जाना है। जिसमे नगरीय निकाय को 25 हजार और ग्रामीण निकाय को 1 लाख पौधारोपण करना है। जिसके लिए जगह का चयन और पौधों की प्रजाति का निर्धारण पूर्व से कर लें। उन्होने मुख्यत: शासकीय विद्यालय, भवन, शासकीय कार्यालय में पौधारोपण करने के निर्देश दिए। उन्होने कहा कि नर्सरी में पौधे की बुकिंग कर उपलब्धता सुनिश्चित कर लें और पौधरोपण की कार्ययोजना का निर्धारण बरसात के पहले कर लें। कलेक्टर ने कहा कि तालाब के गहरीकरण से निकलने वाली मिट्टी किसानों को खेतो में उपयोग करने के लिए जरूरत अनुसार दी जाये। 21 जून को प्रात: 6 बजे से योग दिवस का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में तीनो ब्लाक के सभी विभाग के अधिकारी और कर्मचारी की उपस्थिति अनिवार्य होगी।

महतैन तालाब का किया जा रहा जीर्णोद्धार

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। जिले भर में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत ग्रामीण क्षेत्र के सभी परंपरागत जल स्त्रोतों की साफसफाई और जीर्णोद्धार किया जा रहा है। ग्रामीण विकास विभाग द्वारा जल संरक्षण के कार्य कराये जा रहे हैं। अभियान की कड़ी में नागौद जनपद अंतर्गत महतैन तालाब का वर्षा पूर्व जीर्णोद्धार किया जा रहा है। बुधवार को अभियान की गतिविधियां संचालित कर तालाब संरक्षण के लिये चारो तरफ पिचिंग का कार्य किया गया। पंचायत के कर्मचारियों द्वारा स्थानीय प्रतिनिधियों तथा आमजनों को अभियान से जोड़ने के लिए जागरूकता अभियान भी चलाया गया।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।